7

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 गोरखपुर में काल सेंटर खोल यूके में कर रहे थे ठगी
5 राम मंदिर जैसा होगा जनक महल
8 तीसरी बार चुनाव लड़ने को तैयार हैं पूर्व क्रिकेटर हैदराबाद है पसंदीदा सीट

UPHIN51019 | वर्षः 01, अंकः 4 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 21 अगस्त, 2023

बीजेपी को कितना फायदा देगी चुनाव से पहले उम्मीदवारों के एलान की रणनीति

नई दिल्ली। भाजपा का यह कदम पार्टी की पुरानी चुनावी रणनीति के लिहाज से काफी चौंकाने वाला माना जा रहा है। अमूमन पार्टी चुनाव तारीखों की घोषणा के बाद ही प्रत्याशियों के नाम का एलान करती रही है। कहा जा रहा है कि पार्टी के इस कदम से उम्मीदवारों को चुनाव प्रचार के लिए ज्यादा समय मिलेगा। इससे वो जनता तक अपनी बातें बेहतर तरीके से पहुंचा सकेंगे और पार्टी को इसका फायदा होगा। ऐसे में सवाल ये है कि आखिर भाजपा से पहले किन पार्टियों ने चुनाव घोषित होने से पहले प्रत्याशी घोषित किए? ऐसा करने वाली पार्टियों का चुनाव में प्रदर्शन क्या रहा?

पहले जानते हैं अभी क्या हुआ है ?

मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा के कुल ६० उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी गई। इनमें मध्य प्रदेश से ३९ और छत्तीसगढ़ से २१ प्रत्याशियों के नाम का एलान किया गया। दोनों राज्यों की इन साठ सीटों में से ५९ पर भाजपा को २०१८ में हार मिली थी। वहीं, झाबुआ सीट पर २०१८ में पार्टी को जीत जरूर मिली थी। लेकिन, बाद में हुए उपचुनाव में यहां से कांग्रेस के कांतिलाल भूरिया विधायक बने थे। इसी तरह छत्तीसगढ़ की सभी २१ सीटों पर इस वक्त कांग्रेस का कब्जा है। २०१८ के चुनाव में इन २१ में से २० पर कांग्रेस और एक पर जनता कांग्रेस को जीत मिली थी। राज्य की मरवाही सीट से पूर्व मुख्यमंत्री और जनता कांग्रेस के सुप्रीमो रहे अजीत जोगी जीते थे। जोगी के निधन के बाद हुए उपचुनाव में यहां कांग्रेस को जीत मिली।

क्या पहले भी पार्टियां चुनाव तारीखों के एलान से पहले प्रत्याशी घोषित करती रही हैं ?

चुनाव घोषित होने से पूर्व उम्मीदवारों की सूची जारी करने के कई उदाहरण मिलते हैं। अलग-अलग पार्टी अलग-अलग समय पर इस रणनीति को अपनाती रही है। दिलचस्प ये है कि भाजपा ने इन राज्यों में उम्मीदवारों का एलान करने वाली पहली पार्टी नहीं है। भाजपा से पहले मायावती की पार्टी बहुजन समाज पार्टी छत्तीसगढ़ में उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर चुकी है। बसपा ने आठ अगस्त को ही राज्य की नौ विधानसभा सीटों के लिए प्रत्याशियों का एलान किया था। २०१८ के चुनाव में बसपा राज्य में दो सीटें जीतने में सफल रही थी। पार्टी को करीब चार फीसदी वोट भी मिले थे। इसी तरह मध्य प्रदेश में भी बसपा १० अगस्त को ही सात उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर चुकी है। इतना ही नहीं मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ से भी पहले पार्टी ने राजस्थान के उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी थी। पार्टी ने २८ जुलाई को तीन सीटों के लिए उम्मीदवारों का एलान कर दिया था। तीनों सीटें पूर्वी राजस्थान के धौलपुर और भरतपुर जिलों की हैं और इनमें से दो सीटें २०१८ में बसपा उम्मीदवारों ने जीती थीं। हालांकि, बसपा के सभी जीते हुए छह विधायक बाद में कांग्रेस में शामिल हो गए थे।

क्या बसपा ने भी भाजपा की तरह पहली बार इस रणनीति को अपनाया है ?

बसपा की ये काफी पुरानी रणनीति रही है। पिछले कई चुनावों से पार्टी चुनावी राज्य में चुनाव तारीखों की घोषणा से काफी पहले उम्मीदवारों का एलान कर देती है। यहां तक संबंधित उम्मीदवार महीनों पहले चुनाव प्रचार में लग जाते हैं। इन राज्यों में उत्तर प्रदेश भी शामिल है। २००७ में जब बसपा पूर्ण बहुमत से सत्ता में आई थी तब भी पार्टी ने अधिकतर उम्मीदवारों को चुनाव की घोषणा से करीब एक साल पहले ही बता दिया था कि आपको चुनाव लड़ना है। २०२२ के यूपी विधानसभा चुनाव से पहले भी पार्टी ने अधिकांश सीटों पर इसी रणनीति पर काम किया था। हालांकि, औपचारिक सूची बाद में जारी की गई।

तो क्या सिर्फ बसपा में ऐसा होता रहा है?

ऐसा नहीं है। हाल के वर्षों में कई पार्टियां इस रणनीति पर काम करती रही हैं। सबसे ताजा उदाहरण हाल में हुए कर्नाटक विधानसभा चुनाव में ही देखने को मिलता है। राज्य के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और जेडीएस ने यही रणनीति अपनाई थी।

जेडीएस ने कर्नाटक विधनसभा चुनाव के एलान से करीब साढ़े तीन महीने पहले अपने उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर दी थी। पार्टी ने १९ दिसंबर २०२२ को ६३ प्रत्याशियों वाली पहली सूची जारी की। राज्य में २९ मार्च को चुनाव कार्यक्रम की घोषणा हुई। वहीं, १३ मई नतीजे आए थे। चुनाव नतीजों में पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा की पार्टी जेडीएस तीसरे नंबर पर रही थी। २२४ सदस्यीय विधानसभा में पार्टी को पहले से भी कम महज १९ सीटें ही मिल सकीं और उसकी रणनीति का कुछ खास असर भी नहीं हुआ।

कांग्रेस का क्या हुआ ?

इसी चुनाव के लिए कांग्रेस ने भी चुनाव तारीखों के एलान पहले उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर की दी थी। कांग्रेस ने राज्य के विधानसभा चुनाव के लिए २५ मार्च को १२४ उम्मीदवारों की पहली सूची जारी की थी। चार दिन बाद चुनाव आयोग ने चुनाव की तारीखों का एलान किया। जब राज्य में नतीजे आए तो पार्टी को जबरदस्त जीत मिली और इसने १३५ सीटें जीतकर अकेले दमपर सरकार बनाई।

रक्षाबंधन कब 30 या 31 अगस्त को

मान्यता है कि यदि श्रावण पूर्णिमा पर भद्रा का साया हो तो भद्राकाल तक राखी नहीं बांधी जा सकती है। उसके समापन के बाद ही राखी बांधनी चाहिए भद्रा काल में राखी बांधना अशुभ माना जाता है। इस संबंध में पंडित विनोद शास्त्री ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार श्रावण महीने की पूर्णिमा तिथि 30 अगस्त को सुबह 10 बजकर 58 मिनट से शुरू हो रही है।

दिल्ली/नोएडा/गाजियाबाद/हापुड़। श्रावण माह की पूर्णिमा पर भाई बहन का पवित्र पर्व रक्षाबंधन मनाया जाता है। इस बार ३० अगस्त श्रावण पूर्णिमा है, लेकिन इस बार भद्रा का साया होने की वजह से राखी बांधने के शुभ मुहूर्त को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई है। हिंदू धर्म में मान्यता है कि यदि श्रावण पूर्णिमा पर भद्रा का साया हो तो भद्राकाल तक राखी नहीं बांधी जा सकती है। उसके समापन के बाद ही राखीबांधनी चाहिए, भद्रा काल में राखी बांधना अशुभ माना जाता है। बताया गया है कि इस बार ३० अगस्त को दिनभर भद्रा का साया है और इस दिन राखी बांधने के लिए कोई भी मुहूर्त नहीं हैं।

कब लगेगी पूर्णिमा तिथि ?

इस संबंध में पंडित विनोद शास्त्री ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार श्रावण महीने की पूर्णिमा तिथि ३० अगस्त को सुबह १० बजकर ५८ मिनट से शुरू हो रही है। वहीं इसका समापन ३१ अगस्त को सुबह सात बजकर पांच मिनट पर होगा। लेकिन ३० अगस्त को पूर्णिमा तिथि की शुरुआत के साथ ही यानी सुबह १० बजकर ५८ मिनट से मृत्युलोक के भद्रा शुरू हो जा रही है, जो रात नौ बजकर एक मिनट तक रहेगी। वैसे तो ३० अगस्त को रात में भद्रा समाप्त हो जा रही है, लेकिन रात में रक्षा सूत्र नहीं बांधना चाहिए। इसलिए ३१ अगस्त को राखी बांध सकते हैं। इस दिन शुभ समय है। उन्होंने बताया कि पौराणिक कथाओं के अनुसार भद्रा का जन्म दैत्यों के विनाश के लिए हुआ था, लेकिन जब भद्रा का जन्म हुआ और अनुष्ठान होते वहां विघ्न आने लगता है।

भर्ती परीक्षा में धांधली रोकने के होंगे पुख्ता इंतजाम, एआई से दबोचेंगे मुन्ना भाई

लखनऊ। बोर्ड के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सिपाही भर्ती की लिखित परीक्षा को अ फलाइन कराए जाने का निर्णय लिया गया है। इसमें ओएमआर शीट पर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यूपी पुलिस में होने वाली सबसे बड़ी सिपाही सीधी भर्ती परीक्षा के लिए उप्र पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड आर्टिफिशिएल इंटेलिजेंस (एआई) का इस्तेमाल करेगा। बोर्ड ने परीक्षा कराने वाली कार्यदायी संस्था के चयन में तकनीक संबंधी इस बिंदु को भी शामिल किया है। दरअसल, भर्ती परीक्षाओं में लगने वाली सेंध पर अंकुश लगाने के लिए तकनीक का इस्तेमाल कर मुन्ना भाइयों को दबोचने में खासी मदद मिल रही है। इसी वजह से सिपाही भर्ती परीक्षा के दौरान बायोमीट्रिक के साथ फेस रिकग्निशन समेत तमाम अत्याधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करने की तैयारी है।बोर्ड के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि सिपाही भर्ती की लिखित परीक्षा को आफलाइन कराए जाने का निर्णय लिया गया है। इसमें ओएमआर शीट पर वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। परीक्षा में कोई सेंध न लगा सके, इसके लिए एआई का इस्तेमाल किया जाएगा। हाल ही में हुई वीडीओ परीक्षा में इसके इस्तेमाल से तमाम परीक्षा केंद्रों पर साल्वरों को आसानी से दबोचा गया था।

सम्पादकीय

कला में उपभोक्तावाद और गांधी का संदेश

उदार लोकतंत्र में जो लोग सत्ता में रहते हैं वे राजनीतिक उद्देश्यों के लिए पूंजीवादी उद्योग का इस्तेमाल अपने निहित स्वार्थों के लिए करते हैं

उदार लोकतंत्र में जो लोग सत्ता में रहते हैं वे राजनीतिक उद्देश्यों के लिए पूंजीवादी उद्योग का इस्तेमाल अपने निहित स्वार्थों के लिए करते हैं। उपभोक्ता विचारधारा उत्पन्न करते समय पारंपरिक संसिंति को महत्वपूर्ण बनाया जाता है। कला रूपों का उपयोग आम विरासत को वैध बनाने और निजीकरण करने के लिए किया जाता है, चाहे वह जैविक हो या सांसिंतिक। हमें इन दिनों बताया गया है कि नई वैश्विक व्यवस्था में भारत की प्रगति बहुत शानदार है। अभी १५ अगस्त को ही भारत ने अपना ७७वां स्वतंत्रता दिवस मनाया है। आज के राजनीतिक माहौल में हम शायद ही कभी १९४८ में दिए महात्मा गांधी के उस सूत्र को याद करते हैं जो उन्होंने हमें भारत की आबादी के सबसे गरीब और सबसे कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के कल्याण की कल्पना करने के लिए यह पूछते हुए दिया था कि क्या आप जिस कदम पर विचार कर रहे हैं वह उनके लिए कोई काम आने वाला है? हमें आज इस सूत्र की पहले से कहीं ज्यादा जरूरत है।

भारत को रचनात्मक कल्पना के एक नए संग्रह की आवश्यकता है ताकि यह तय किया जा सके कि जमीन से जुड़े लोगों के रचनात्मक विकास पर सांसिंतिक हस्तक्षेप का क्या प्रभाव पड़ सकता है। हम खुद को यह भूलने की अनुमति नहीं दे सकते कि जलवायु परिवर्तन के कारण पारिस्थितिक संकट उन लोगों की तुलना में गरीबों को अधिक प्रभावित करेगा जो हमारी आधुनिक दुनिया के उपभोक्ता समाज को आकार दे रहे हैं। एक कलाकार के रूप में लेखक को विशेष रूप से गरीबों की संस्कृति और कला में रुचि है। लेखक की राय है कि जिसे हम लोक कला कहते हैं, उसके बारे में जो विशिष्ट तथ्य है वह भौतिकवाद से इसकी स्वतंत्रता है। लोक सौंदर्यशास्त्र भौतिक धन से जुड़ा नहीं है।

यह ऐसे समय में जब हम स्वतंत्रता का उत्सव मना रहे हैं, तो यह याद रखना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। किस चीज से आजादी? उपनिवेशवाद ने संसिंति की समृद्धि को न पहचानते हुए उसे गरीब बना दिया, लेकिन औद्योगिकवाद एक अन्य प्रकार की दरिद्रता है जहां अमीर सोचते हैं कि वे गरीबों की संसिंति का विनियोजन कर संसिंति को नियंत्रित करते हैं। अपने पास कुछ न रखनेश यानी अपरिग्रह में एक मूल्य है जो जमीन से जुड़े रहने वालों की विशिष्ट संस्कृति में है, उसके केंद्र में निहित है। यह अपरिग्रह उस प्रकार की अति सूक्ष्मता और सादगी का सार है। यह एक ऐसी संसिंति की विशेषता है जो चीजों को रखने के बारे में सोचती नहीं है।

वर्धा के समीप सेवाग्राम में मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी पर एक बैठक १९७८ में आयोजित की गई थी। मैसेज आफ बापूश्ज हट (बापू की कुटिया का संदेश) विषय पर आयोजित इस गांधीवादी संगोष्ठी का उद्घाटन इवान इलिच ने किया था। लेखक ने एक बार अपने छात्रों को इवान इलिच के विचारों के बारे में बताते हुए पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि इस तरह बापू की झोपड़ी के संदर्भ में दिए गए संदेश को भारतीय संदर्भ में उपयुक्त माना जा सकता है? लेखक को पता था कि उसके कई छात्र एक आधुनिक संसिंति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो इस तरह की झोपड़ी को अविकसित के नजरिए से देखकर अस्वीकार करती है। श्वर्नाकुलर आर्किटेक्चरश को नया स्वरूप देने का प्रयास आउटडेटेड और रोमांटिक माना जाता है जो राजनीतिक आजादी के बाद वैश्विक प्राथमिकताओं के लिए प्रयास कर रहे आधुनिक भारत के लिए अप्रासंगिक है।

कोविड महामारी से बहुत पहले ही आधुनिकता की महामारी ने अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई को और चौड़ा करना शुरू कर दिया था। श्अंबानी सांसिंतिक केंद्रश का उद्देश्य भारतीय कलाओं को संरक्षित और बढ़ावा देना है जो हाल ही में बेंगलुरु में खोले गए कला और फोटोग्राफी संग्रहालय (म्यूजियम अ फ आर्ट एंड फोटोग्र फी-एमएपी) से मेल खाता है। इस तरह की पहल आर्थिक रूप से क पोंरेट उद्योग द्वारा समर्थित है। एमएपी में ज्योति भट्ट (जन्म १९३४) की प्रदर्शनी उनके काम को प्रदर्शित करती है। गुजरात के गांवों में पारंपरिक सजावट, जमीन पर बनी और उनके साधारण घरों की मिट्टी से ढंकी दीवारों को दिखाते हुए उनके द्वारा खींचे गए फोटो विशेष दिलचस्प हैं जिनमें धरती से जुड़ी ग्रामीण संसिंति का उत्सव दिखाया गया है। ज्योति भट्ट ने स्थानीय स्तर पर प्राप्त बुनियादी कच्ची सामग्री का उपयोग कर प्रेंति की लय से जुड़े समुदायों के रोजमर्रा के जीवन का दस्तावेजीकरण किया।ंषक समाज ने एक दृश्य भाषा विकसित की है जो प्रोंतिक परि श्य के करीब है। इस तरह की संसिंति को उपभोक्ता उद्योग संसिंति द्वारा बाधित किया गया है।

भारत की लोक कलाओं के सौंदर्य ने कई आधुनिक भारतीय कलाकारों को एक निहित शब्दावली प्रदान की है जिसकी जड़ें हमारी परंपराओं में हैं और जो समकालीन प्रश्नों को भी संबोधित कर सकती है। इस कला का उद्देश्य जीवन के पूर्व-औद्योगिक तरीके को चित्रित करना नहीं है बल्कि उन लोगों के दैनिक अनुभव को मूर्तरूप देना है जिनका जीवन मौसम के बदलाव के अनुसार होता है। आनंद कुमारस्वामी ने जब सौंदर्यशास्त्र के लिए स्वदेशी दृष्टिकोण की बात की तो इसने बंगाल स्कूल आफ आर्ट के अवनींद्रनाथ टैगोर और जामिनी र य जैसे अन्य छात्रों को प्रोंतिक वातावरण के करीब रहने वाली कहानियों और प्रतीकों पर आधारित लोक कल्पना की सराहना करने के लिए प्रेरित किया। इस स्वदेशी कला ने कला के लिए कला की पश्चिमी परिकल्पना से अलग होकर राष्ट्रवादी आंदोलन में एक स्थान ग्रहण किया। कला के लिए कला की पश्चिमी परिकल्पना आधुनिक संसिंति को विकसित करने की कोशिश करता है। पारिस्थितिकीविदों का मानना है कि जब उपभोक्तावाद द्वारा प्रेंति नष्ट की जा रही है तब हमारे वर्तमान सांसिंतिक गतिरोध को दूर करने का एकमात्र उपाय स्वदेशी कला है। उदार लोकतंत्र में जो लोग सत्ता में रहते हैं वे राजनीतिक उद्देश्यों के लिए पूंजीवादी उद्योग का इस्तेमाल अपने निहित स्वार्थों के लिए करते हैं। उपभोक्ता विचारधारा उत्पन्न करते समय पारंपरिक संसिंति को महत्वपूर्ण बनाया जाता है। कला रूपों का उपयोग आम विरासत को वैध बनाने और निजीकरण करने के लिए किया जाता है, चाहे वह जैविक हो या सांसिंतिक। वैश्विक अनुरूपता के जरिए रचनात्मकता को नियंत्रित किया जाता है जो विविधता को कम करता है।

कला समीक्षक संदीप लुइस बताते हैं कि किस तरह आधुनिक भारतीय कला लोक कला की परंपराओं को मानव शास्त्र और इतिहास के बीच के रूप में उपयोग करती है। लुइस चर्चा में इस बात का उल्लेख करते हैं। १९८२ में आधुनिक कलाकार जगदीश स्वामीनाथन नवनिर्मित भारत भवन का प्रमुख बन कर भोपाल गए थे। उस समय भारत सरकार ने ग्रामीण उद्योगों के संदर्भ में ग्रामीण और आदिवासी समुदायों की कलात्मक क्षमता को विकसित करने की कोशिश की। बाद में इन समुदायों के हितों को निजी क्षेत्र को सौंप दिया गया। स्वामीनाथन ने भारत भवन से जुड़े रूपंकर कला संग्रहालय के निदेशक के रूप में कार्य किया। उन्हें युवा गोंड कलाकार जनगढ़ सिंह श्याम को श्ढूंढ निकालनेश का श्रेय दिया गया जो पाटनगढ़ के दूरस्थ आदिवासी गांव में काम कर रहे थे। इस बेहद रचनात्मक युवा कलाकार के काम को बेंगलुरु में कला और फोटोग्राफी संग्रहालय सहित दुनिया भर की विभिन्न दीर्घाओं में देखा जा सकता है।

हालांकि एक पूरे समुदाय से उत्पन्न होने वाली रचनात्मक अभिव्यक्ति और कला बाजार द्वारा कला के लिए व्यक्तिवादी कला के व्यवसायीकरण में एक मौलिक अलगाव है। आधुनिक भारतीय कला में लोक संसिंति के संदिग्ध उपयोग में हम जो देखते हैं वह यह है कि किस तरह से प्रेंति के उत्सव का निजीकरण किया गया है और उसे एक उपभोक्ता वस्तु में बदल दिया गया है जो कला उद्योग का एक हिस्सा बन जाता है। लोक परंपरा में कला प्रथाएं संसिंति और प्रेंति, समुदाय और पूरे जीवंत ब्रह्मांड को एक साथ लाने का तरीका थीं। अंत में, जनगढ़ सिंह श्याम द्वारा ३८-३९ वर्ष की आयु में तोकामाची (जापान) में अपनी जान लेने की त्रासदीपूर्ण मौतों की एक श्रृंखला की परिणति थी जिसकी शुरुआत उस समय हुई जब कला की व्यावसायिक उपयोग करने वाली दुनिया के लिए अपने मूल गोंड गांव को छोड़ दिया, वह व्यावसायिक दुनिया जिसमें जंगल के जादू को भुला दिया गया था।

ताप-विद्युत बनाम अक्षय-ऊर्जाः कोयले की कालिख

उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के सिंगरौली-सोनभद्र के कुछ इलाकों में लगभग ९ थर्मल-पावर प्लांट हैं। यहां २०१९-२० में फ्लाई-ऐश बांध टूटने की तीन घटनाओं ने थर्मल-पावर प्लांट की राख के रख-रखाव पर सवाल खड़े किये थे। उसी क्षेत्र में बार-बार राख-बांध टूटने की घटनाएं और राख का ढेर, सिंगरौली-सोनभद्र में रहने वाले लोगों को कई वर्षों से वायु-प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव झेलना पड़ रहा है। भारत का लक्ष्य २०२२ तक अक्षय ऊर्जा यानी रिन्यूएबल एनर्जी (अक्षय ऊर्जा या नवीकरणीय ऊर्जा के उदाहरण हैं बायोगैस, बायोमास, सौर ऊर्जा इत्यादि) से १७५ गीगाव ट बिजली उत्पादन करने का था। भारत सरकार ने भी २०३० तक अक्षय ऊर्जा क्षमता को ५०० गीगावाट तक बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई है। रिन्यूएबल एनर्जी के लक्ष्य को हासिल करने के लिए देश को हर साल लगभग डेढ़ से दो लाख करोड़ रुपए के निवेश की जरूरत है, लेकिन अभी इस क्षेत्र में सालाना ७५ हजार करोड़ रुपए का ही निवेश हो पा रहा है। यह अक्षय ऊर्जा के लक्ष्य को हासिल करने के लिए नाकाफी है। भारत के प्रधानमंत्री ने २६ वें संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन (सीओपी- २६) में घोषणा की थी कि भारत २०३० तक अपनी गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को ५०० गीगावाट तक पहुंचाएगा। यही नहीं, २०३० तक अपनी ५० प्रतिशत ऊर्जा की जरूरत श्अक्षय ऊर्जाश से पूरी करेगा और कुल अनुमानित कार्बन उत्सर्जन में एक अरब टन की कमी करेगा। भारत, अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता (इन्टेंसिटी) को ४५ प्रतिशत से भी कम करेगा और २०७० तक नेट जीरो का लक्ष्य हासिल करेगा। सवाल है कि मैदान में क्या हो रहा है?

इसी माह की शुरुआत में उत्तरप्रदेश सरकार ने सोनभद्र जिले के ओबरा में १८,००० करोड़ रुपये की लागत से ८०० मेगावाट की दो अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल ओबरा-डी थर्मल-पावर परियोजनाओं को मंजूरी दी है, जिसका उद्देश्य राज्य के लोगों को सस्ती बिजली प्रदान करना बताया जा रहा है। ऊर्जा मंत्री ने यह भी कहा है कि थर्मल-पावर उत्पादन के मामले में उत्तरप्रदेश की मौजूदा क्षमता ७,००० मेगावाट है और ये दो संयंत्र मौजूदा क्षमता का लगभग २५ प्रतिशत योगदान देंगे।

एक नयी परियोजना-१६०० मेगावाट क्षमता वाली ओबरा-डी को १८००० करोड़ रुपये की लागत की मंजूरी दी गई। इस प्रस्तावित परियोजना के लिए सरकार द्वारा पहले ही ५०० एकड़ जमीन उपलब्ध करवाई जा चुकी है और यदि आवश्यकता हुई तो और अधिक जमीन आवंटित की जाएगी। सरकार के इस निर्णय से क्षेत्र के लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा। इस प्रस्तावित परियोजना में राज्य सरकार और केंद्र सरकार के स्वामित्व वाली बिजली जनरेटर एनटीपीसी के साथ आधी-आधी साझेदार होगी। परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए जहां ३० प्रतिशत इक्विटी दी जाएगी, वहीं शेष ७० प्रतिशत राशि की व्यवस्था वित्तीय संस्थानों से की जाएगी। इसका मतलब यह है कि बैंकों में जमा जनता का पैसा इस परियोजना पर लगाया जाएगा, जिससे थर्मल-पावर प्लांट के आसपास रहने वाली जनता का ही नुकसान होगा।

डाउन टू अर्थ पत्रिका में छपे एक लेख के अनुसार उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के सिंगरौली-सोनभद्र के कुछ इलाकों में लगभग ९ थर्मल-पावर प्लांट हैं। यहां २०१९-२० में फ्लाई-ऐश बांध टूटने की तीन घटनाओं ने थर्मल-पावर प्लांट की राख के रख-रखाव पर सवाल खड़े किये थे। उसी क्षेत्र में बार-बार राख-बांध टूटने की घटनाएं और राख का ढेर, सिंगरौली-सोनभद्र में रहने वाले लोगों को कई वर्षों से वायु-प्रदूषण का प्रतिकूल प्रभाव झेलना पड़ रहा है। अतिरिक्त राख के कारण अक्सर ये बांध लीक या ओवरफ्लो हो जाते हैं, जिससे आसपास रहने वाले लोगों के लिए तबाही मच जाती है। इससे भूजल और सतही जल प्रदूषित भी होता है। इस क्षेत्र की पहचान केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा गंभीर रूप से प्रदूषित क्षेत्र के रूप में की गई है।

आजादी के इंतजार में आधी आबादी

भारतीय समाज में अभी भी यह अवधारणा है कि समाज पुरुषों से चलता है। लड़ की का होना ही एक बोझ माना जाता है। उसके जन्म होने के पहले ही उसे खत्म करने की साजिश शुरू हो जाती है और पैदा हो जाए तो बचपन से अधिकतर परिवारों में वे लड़की होने के अपराध बोध से ग्रस्त रहती हैं। यह मानकर चला जाता है कि वह पराया धन है। देश स्वतंत्रता प्राप्ति की ७६वीं वर्षगांठ मनाया है। हमने अपना अमृत महोत्सव भी मना लिया। विश्व गुरु होने को लालायित हम हर क्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि कर रहे हैं। विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था से ऊपर छलांग लगाने की लालसा भी है, लेकिन यूनाइटेड नेशंस डेवलेपमेंट प्रोग्राम (यूएनडीपी) के जेंडर सोशल इंडेक्स की ताजा रिपोर्ट कुछ और बताती है। यूएनडीपी ने चार आयामों रूराजनीतिक, शैक्षिक, आर्थिक और भौतिक अखंडता में महिलाओं के प्रति लोगों के नजरिये को ट्रैक किया। इसकी रिपोर्ट के मुताबिक लगभग ९०फीसदी लोग अभी भी महिलाओं के खिलाफ कम-से-कम एक पूर्वाग्रह रखते हैं। दूसरे देशों की तुलना में भारतीय महिलाओं के लिए यह कहीं ज्यादा है। यहां राजनीतिक पूर्वाग्रह ९८.९ प्रतिशत, शैक्षणिक ३८.५ प्रतिशत, आर्थिक ७५.१ प्रतिशत और भौतिक अखंडता पर पूर्वाग्रह ९२.४ प्रतिशत है।

यूएनडीपी की रिपोर्ट को मैदानी अनुभवों से जोड़कर देखें तो तीन महीने से जातीय हिंसा की आग में जलकर खाक हो रहा उत्तर-पूर्व का राज्य मणिपुर दिखाई देता है। वहां की राज्यपाल महामहिम अनुसुइया उइके ने भी स्वीकार किया है कि ऐसी हिंसा उन्होंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी। इस जातिगत हिंसा का शिकार कौन बना? दोनों ओर की महिलाएं ही? वे न आतंकवादी थीं, न राष्ट्रवाद विरोधी और न ही खूनी या डकैत। वे किसी की मां, बहन एवं बेटी थीं। एक कारगिल के जवान की पत्नी थीं, तो एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की पत्नी थीं। ऐसी कई बहन-बेटियां मारी गईं या जला दी गईं। कैसे और किसने? उसी समुदायों के पुरुषों ने जिन्होंने यह मान रखा है कि किसी भी महिला पर अत्याचार करना उनका जन्मजात हक है और ऐसा करने में उन्हें न कोई शर्म है, न समाज, शासन, प्रशासन का कोई भय।

भारतीय महिलाओं की समाज में उल्लेखनीय भूमिका है। हर वर्ग की स्त्रियां अपने शारीरिक,सामाजिक, व्यावहारिक एवं आर्थिक योगदान से समाज को, परिवार को, देश को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहायता प्रदान कर रही हैं। बावजूद इसके कश्मीर से कन्याकुमारी हो, या राजस्थान से मणिपुर, महिलाओं पर होने वाले उत्पीड़न एवं अत्याचारों की संख्या श्ट्रिलियन डालर इकानामी की तरह बढ़ती ही जा रही है और इस मामले में कोई भी वर्ग अछूता नहीं है।

भारतीय समाज में अभी भी यह अवधारणा है कि समाज पुरुषों से चलता है। लड़ की का होना ही एक बोझ माना जाता है। उसके जन्म होने के पहले ही उसे खत्म करने की साजिश शुरू हो जाती है और पैदा हो जाए तो बचपन से अधिकतर परिवारों में वे लड़की होने के अपराध बोध से ग्रस्त रहती हैं। यह मानकर चला जाता है कि वह पराया धन है। दान दहेज दे, एक सुखी जीवन देने की आस में लड़कियों के परिवार के माता-पिता विवाह कर भार मुक्त हो जाते हैं, लेकिन शादी करके अपने पति के घर गई लड़की वैचारिक तौर पर परिवार के हर व्यक्ति से समझौता करती है। उसे यह शिक्षा दी जाती है कि वह निभाना एवं निभना सीखे। वहीं पारिवारिक संप्रभुता का वर्चस्व किसी भी महिला के साथ होने वाले मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक उत्पीड़न का कारण बनता है। बलात जबरदस्ती, दहेज प्रताड़ना, गाली देना, भूखे रखना, शराब पीकर महिलाओं को मारना, अपहरण हो लापता होना-ऐसे अनेक मामले हैं जिसने देश में महिलाओं का जीना दूभर किया हुआ है। आज देश में महिलाओं का न कार्य क्षेत्र बढ़ा है। वे हर मोर्चे पर आत्मविश्वास से काम कर रही हैं, लेकिन उनका प्रतिशत काफी कम है। उपयुक्त वातावरण का न मिल पाना उन्हें घर बैठने को मजबूर कर देता है। महिलाओं एवं लड़कियों के प्रति बढ़ रहे दुराचारों के मामले में बढ़ोतरी चिंता का विषय तो है। एक भययुक्त वातावरण में देश की महिलाएं जीने को मजबूर हैं, चाहे वे कितने ही उच्च पद पर आसीन क्यों न हो। राजनीति का क्षेत्र देश का सबसे मुखर क्षेत्र है। कहने-सुनने की आजादी एक प्रजातांत्रिक देश होने के कारण सबको मिलती है। उसमें भी सरपंच महिला हो या जनपद अध्यक्ष, यहां तक कि महिला पार्षद तक का प्रतिनिधित्व उनके पति करते हैं, न कि निर्वाचित महिलाएं। वर्तमान में संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व १४.४ प्रतिशत है जो महिलाओं की संख्या की तुलना में बहुत कम है।

नगर निगम कार्यकारिणी में बीजेपी का परचम 12 में से नौ सीटों पर निर्विरोध चुने गए पार्षद

गोरखपुर में नगर निगम के कार्यकारिणी के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने परचम लहराया है। भारतीय जनता पार्टी ने कार्यकारिणी के लिए नौ पार्षदों के नाम तय किए गए थे। पार्टी घोषित सभी नौ पार्षदों को निर्विरोध कार्यकारिणी में स्थान दिलाने में सफल रही। वहीं सपा ने जुबेर अंसारी विश्वजीत त्रिपाठी और विजेंद्र अग्रहरि को पहले ही प्रत्याशी बनाया था।

नगर निगम कार्यकारिणी में नौ सीटों पर निर्विरोध चुने गए पार्षद।

गोरखपुर,संवाददाता। नगर निगम चुनाव में बहुमत पाने के बाद कार्यकारिणी के चुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने अपना परचम लहराया है। पार्टी घोषित सभी नौ पार्षदों को निर्विरोध कार्यकारिणी में स्थान दिलाने में सफल रही। समाजवादी पार्टी के घोषित सभी तीन पार्षद कार्यकारिणी में चुने गए हैं। बसपा की प्रत्याशी ने नामांकन दाखिल किया लेकिन बाद में उन्होंने नाम वापस ले लिया। एक अन्य महिला प्रत्याशी ने भी नामांकन किया था लेकिन उन्होंने भी नाम वापस ले लिया। निर्दल प्रत्याशी लाली गुप्ता ने नामांकन पत्र लिया लेकिन उन्होंने जमा नहीं किया।

इन पार्षदों के नाम किए गए थे तय

बुधवार देर रात तक चले मंथन के बाद भारतीय जनता पार्टी ने कार्यकारिणी के लिए नौ पार्षदों के नाम तय किए थे। इनमें रणंजय सिंह जुगनू, धर्मदेव चौहान, अजय राय, देवेंद्र गौड़ पिंटू, मनु जायसवाल, मनोज निषाद, अजय ओझा, रविंद्र सिंह सैंथवार और आनंद वर्धन सिंह शामिल रहे। सपा ने जुबेर अंसारी, विश्वजीत त्रिपाठी और विजेंद्र अग्रहरि को पहले ही प्रत्याशी बनाया था। बसपा ने रीना देवी को प्रत्याशी बनाया था। भाजपा संगठन से वार्ता विफल होने के बाद निर्दल प्रत्याशी लाली गुप्ता ने भी चुनाव लड़ने की घोषणा कर दी थी।

निर्धारित समय से आधे घंटे बाद सुबह ११रू३० बजे चुनाव प्रक्रिया शुरू हुई। चुनाव अधिकारी लेखा अधिकारी रवि सिंह ने एक घंटे का समय नामांकन पत्र लेने और जमा करने के लिए निर्धारित किया। इस एक घंटे में १६ नामांकन पत्र लिए गए। दोपहर १२रू३० से नामांकन पत्रों को जमा करने की शुरुआत हुई। इसमें १४ पार्षदों ने नामांकन पत्र जमा किए। जांच के बाद सभी नामांकन पत्रों को वैध घोषित किया गया। दोपहर एक बजे से नाम वापसी की प्रक्रिया शुरू हुई। इसमें बसपा प्रत्याशी ने नाम वापस ले लिया और एक अन्य महिला ने भी अपनी दावेदारी वापस ले ली। इसके बाद १२ सदस्यीय कार्यकारिणी में १२ दावेदार ही रह गए। नाम वापसी की समय सीमा खत्म होने के बाद चुनाव अधिकारी ने सभी के निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की। इसके बाद महापौर और नगर आयुक्त ने सभी कार्यकारिणी सदस्यों का स्वागत किया।

गोरखपुर में काल सेंटर खोल यूके में कर रहे थे ठगी

आठ जालसाजों को किया गया गिरफ्तार, चल रही पूछताछ

क्राइम ब्रांच व साइबर थाना पुलिस ने आठ जालसाजों को पकड़ा
जामताड़ा के दो युवकों को बनाया था काल सेंटर प्रभारी
कोलकाता का रहने वाला है सरगना, लंदन के साथी की मदद से करता था ठगी।

गोरखपुर,संवाददात। पुलिस ने गोरखुपर में काल सेंटर खोलकर यूके (यूनाइटे किंगडम) में ठगी करने वाले अंतर्राष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश किया है। कोलकाता, जामताड़ा (झारखंड) के रहने वाले आठ जालसाजों को क्राइम ब्रांच व साइबर थाना पुलिस की टीम ने शुक्रवार की सुबह गिरफ्तार किया। जालसाजों ने बेतियाहाता में अपना कार्यालय खोला था। आरोपितों से पूछताछ में एक वर्ष के भीतर करोड़ों की ठगी किए जाने का मामला सामने आया है।

यह है मामला

पुलिस के अधिकारियों को सूचना मिली थी कि इंटरनेट की स्पीड बढ़ाने का झांसा देकर ठगी करने वाला अंतर्राष्ट्रीय गिरोह शहर में सक्रिय है। कोलकाता के रहने वाले दो युवक इसे काल सेंटर की आड़ में चल रहा हैं। बेतियाहाता में स्थित कार्यालय में २५ स्थानीय युवक व युवतियां भी काम करती हैं। गिरोह के दो सदस्य लंदन में है जो राउटर (इंटरनेट की स्पीड बढ़ाने का उपकरण) बेचते हैं। गोरखपुर स्थित काल सेंटर की कमान जामताड़ा के रहने वाले दो युवकों के पास है। यह लोग राउटर खरीदने वाले व्यक्ति के मोबाइल में स्पीड बढ़ाने के नाम पर एक एप इंस्टाल कराकर अपने खाते में आनलाइन भुगतान कराते हैं। इसके बाद भुगतान करने वाले का एकाउंट हैक कर अपने खाते में रुपये ट्रांसफर कर लेते हैं। एक वर्ष से यह खेल चल रहा है। एसएसपी के निर्देश पर साइबर थाना व क्राइम ब्रांच की टीम ने जांच की तो मामला सही मिला। शुक्रवार की सुबह बेतिहाता स्थित काल सेंटर पर छापा डाल पुलिस ने सरगना समेत आठ लोगों को दबोच लिया।

> क्राइम ब्रांच व साइबर थाना पुलिस ने इंटरनेट की स्पीड बढ़ाने का झांसा देकर ठगी करने वाले अंतर्राष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश करते हुए आठ जालसाजों को पकड़ा है। टीम द्वारा जालसाजों से पूछताछ चल रही है। गोरखपुर में जालसाजों ने काल सेंटर खोला है जहां से यूके में ठगी कर रहे थे। जामताड़ा के दो युवकों को सेंटर प्रभारी बनाया था। वहीं पुलिस ने कर्मचारियों को छोड़ दिया है।

बड़े शहर में रहती है पुलिस की नजर, इसलिए यहां खोला कार्यालय

बड़े शहर में पुलिस की नजर काल सेंटर पर रहती है और कर्मचारी भी महंगे वेतन वाले मिलते हैं। इससे बचने के लिए गोरखपुर में जालसाजों ने कार्यालय खोला था जिसमें २५ स्थानीय युवक व युवतियां भी काम कर रही थीं। पूछताछ व जांच में कर्मचारियों की भूमिका जालसाजी में न होने पर पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया।

बदल रहा गोरखपुर, छह सौ करोड़ से बढ़ेगी रामगढ़ताल की भव्यता, खूबसूरती देख सैलानियों को मिलेगा सुकून

गोरखपुर,संवाददाता। अपनी सुंदरता से पर्यटकों को आकर्षित करने वाले रामगढ़ताल की भव्यता कई गुणा और बढ़ने वाली है। पानी पूरी तरह से साफ होगा और ताल के चारों तरफ रामगढ़ताल फ्रंट विकसित किया जाएगा। यहां आकर लोगों को सुकून मिलेगा और हर वर्ग के लोगों के मनोरंजन की व्यवस्था भी यहां होगी। अभी केवल एक हिस्से में पर्यटन स्थल विकसित किया गया है लेकिन ६०० करोड़ की अनुमानित लागत वाले इस प्रस्ताव के मूर्त रूप लेते ही ताल का हर क्षेत्र खूबसूरत नजर आएगा। इस योजना के बारे में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को जानकारी दी जा चुकी है और उनकी ओर से हरी झंडी भी मिल चुकी है। इस योजना को पूरा करने के लिए तीन साल का समय निर्धारित किया गया है।

हर हिस्से में होंगी अलग–अलग तरह की सुविधाएं

रामगढ़ताल फ्रंट को विकसित करने के लिए पूरे ताल को पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, चार हिस्सों में विभक्त किया जाएगा। हर हिस्से में अलग-अलग तरह की सुविधाएं होंगी। दो लेन के ताल रिंग रोड के साथ इसे विकसित किया जाएगा।

चारो ओर पाथ वे बनाया जाएगा। सड़क के किनारे साइकिल पाथ बनाने की योजना है। भविष्य में इस सड़क को फोरलेन किया जा सकता है। सड़क फोरलेन होने पर साइकिल पाथ बीच में सड़क के दोनों हिस्सों के बीच में आ जाएगा। एक हिस्से में सुंदर पार्क बनाए जाएंगे।

पर्यटकों के बैठने के लिए पर्याप्त इंतजार होगा। यहां से ताल का नजारा भी लिया जा सकेगा। एक हिस्से में अलग-अलग तरह के फाउंटेन होंगे। लोग इसके किनारे बैठकर ताल की रमणीयता का आनंद ले सकेंगे। गाद निकालने

से ताल की गहराई बढ़ेगी और पानी साफ नजर आएगी। किनारों पर और जगह मिलेगी, वहीं बांध बनाकर फ्रंट विकसित किया जाएगा।

ये मिलेंगी सुविधाएं

एक हिस्से में आकर्षक ढंग से बोल्डर पिचिंग की जाएगी, जहां लोग बैठ सकेंगे। एक हिस्से में छठ घाट का निर्माण भी किया जाएगा। छठ के दौरान यहां पूजा हो सकेगी जबकि सामान्य दिनों में पर्यटन स्थल के रूप में इसका उपयोग होगा। लंदन आइ की तरहगोरखपुर आइ भी लगेगा। यानी स्थाई रूप से एक बड़ा गोल झूला लगाया जाएगा, जिसपर बैठकर पूरे शहर की खूबसूरती नजर आएगी।

महापुरुषों की बड़ी प्रतिमाएं बनेंगी, उसके साथ ताल के भीतर तक दर्शक दीर्घा का निर्माण होगा। एक हिस्से में खेलकूद की गतिविधियों के लिए भी व्यवस्था रहेगी। यहां युवा वालीबाल, बास्केटबाल एवं अन्य खेलों का आनंद ले सकेंगे। बच्चों के खेलने के लिए भी जगह होगी। एक ओपेन थियेटर होगा, जहां फिल्में चलाई जाएंगी और लोग ताल की खूबसूरती के बीच खुले आसमान के नीचे बैठकर फिल्म का मजा ले सकेंगे। यहां आने वाले पर्यटकों को लजीज व्यंजनों का आनंद भी मिलेगा। हर चार सौ से पांच सौ मीटर पर कुछ कियोस्क बनाए जाएंगे, जहां लोगों के खाने-पीने की व्यवस्था होगी।

ऐसे होगी बजट की व्यवस्था

६०० करोड़ रुपये की पूरी परियोजना में ३०० करोड़ रुपये का प्रविधान ताल के पर्यावरणीय ड्रेजिंग के लिए रखा गया है। इस काम का जिम्मा सिंचाई विभाग या जल निगम को दिए जाने की तैयारी है।

ड्रेजिंग के बाद निकलने वाले करीब ८१ लाख घन मीटर गाद में से लगभग साढ़े छह लाख घन मीटर का उपयोग ताल के चारो ओर बांध बनाने में कर लिया जाएगा। शेष गाद अन्य सरकारी योजनाओं के लिए उपलब्ध करा दी जाएगी। रामगढ़ताल फ्रंट का विकास लगभग ३०० करोड़ रुपये की लागत से किया जाएगा। इसमें आधी धनराशि जीडीए की ओर से दी जाएगी। तीन साल में ५०-५० करोड़ रुपये देने की योजना है। तीन साल में पर्यटन विभाग से १०० करोड़ रुपये लिए जाने का प्रस्ताव है। ५० करोड़ रुपये स्मार्ट सिटी योजना के जरिए लिए जाएंगे। ताल रिंग रोड पर खर्च होने वाले ५० करोड़ रुपये को इसमें शामिल नहीं किया गया है। यह बजट त्वरित आर्थिक योजना से मिलेगा।

क्या कहते हैं अधिकारी

मंडलायुक्तध्अध्यक्ष जीडीए अनिल ढींगरा ने कहा कि रामगढ़ताल को विश्व स्तरीय पर्यटन स्थल बनाने के लिए ताल फ्रंट का प्रस्ताव तैयार किया गया है। एक हिस्से में जिर तरह से विकास है, वैसे ही अन्य हिस्सों में भी सुंदरीकरण एवं विकास कार्य किए जाएंगे।

जल्द ही इस योजना पर काम शुरू हो जाएगा। जीडीए के उपाध्यक्ष महेंद्र सिंह तंवर ने बताया कि रामगढ़ताल फ्रंट विकसित करने की योजना है। ताल रिंग रोड के साथ इसे विकसित किया जाएगा। इसका प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है। इस परियोजना के बाद यहां पर्यटकों की संख्या और बढ़ सकेगी।

गर्भवती के लिए भगवान बन गई डा. कृति, दर्द से कराह रही यात्री को ऐसे मिला आराम

वंदे भारत में दर्द से कराह रही महिला के पति ने गार्ड से मदद की गुहार लगाई तो गार्ड ने चीफ कंट्रोलर को सूचना देने के साथ ट्रेन में लगे एनाउंस सिस्टम से यात्री की तबीयत खराब होने तथा यात्रा कर रहे चिकित्सक से सहयोग करने की अपील की इस दौरान डा. कृति तत्काल गर्भवती के पास पहुंचीं और आवश्यक दवाइयां उपलब्ध कराईं जिससे उन्हें राहत मिल गई

गोरखपुर, संवाददाता। वंदे भारत में लखनऊ से गोरखपुर आ रही गर्भवती यात्री के लिए डा. कृति सिंह भगवान बन गईं। गार्ड (ट्रेन मैनेजर) की अपील पर डाक्टर ने न सिर्फ दर्द से छटपटा रही महिला यात्री की सीट पर पहुंचकर तत्काल उपचार किया, बल्कि अपने सेवाभाव और ट्रेन की विशेषता से भी लोगों का परिचय करा दिया। यात्रियों ने चिकित्सक, वंदे भारत और रेलवे स्टाफ को धन्यवाद कहा। बुधवार की रात १०:०० बजे के आसपास १५६१० नंबर की अवध-एक्सप्रेस से कैटल रन ओवर (मवेशी का कट जाना) हो गया। पीछे चल रही वंदे भारत भी परसा तिवारी स्टेशन पर खड़ी हो गई। इसी दौरान कोच नंबर-सी ४ की सीट नंबर ३० और ३१ पर पति के साथ बैठीं रोशनी वर्मा के पेट में अचानक तेज दर्द शुरू हो गया। पति भागते हुए गार्ड रितेश सिंह के पास पहुंचे। गार्ड ने चीफ कंट्रोलर को सूचना देने के साथ ट्रेन में लगे एनाउंस सिस्टम (उद्घोषणा यंत्र) से यात्री की तबीयत खराब होने तथा यात्रा कर रहे चिकित्सक से सहयोग करने की अपील की। कान में गार्ड की आवाज पड़ते ही कोच नंबर-सी वन की सीट नंबर १३ पर बैठी डा. कृति तत्काल दर्द से कराह रही महिला यात्री के पास पहुंचीं।

प्यार में बाधा बना पति तो प्रेमी के साथ मिलकर ईंट से कूंच दिया सिर, बेहोशी की हातल में फेंका

प्यार में बाधा बना पति तो प्रेमी के साथ मिलकर ईंट से कूंच दिया सिर, बेहोशी की हातल में फेंका

गोरखपुर संवाददाता। प्रेम संबंध में बाधक बन रहे पति का सिर प्रेमी और उसके दोस्त के साथ मिलकर युवती ने कूंच दिया। इसके बाद बेहोशी की हालत में उसे पिपराच क्षेत्र के मुड़िला गांव में फेंक दिया। १५ अगस्त को ग्रामीणों की सूचना पर पिपराइच क्षेत्र के रहने वाले सुरेश निषाद को खेत से बरामद किया गया। स्वजन ने बीआरडी मेडिकल कालेज में उसे भर्ती कराया, जहां उसका उपचार चल रहा है। सुरेश के पिता राजेन्द्र निषाद की तहरीर पर पुलिस ने पत्नी रेशमा, उसके दोनों भाई और एक भाई के साले धर्मराज के विरुद्ध केस दर्ज किया। यद्यपि पुलिस की जांच में घटना में भाईयों का नाम नहीं आने पर उन्हें छोड़ दिया गया है। धर्मराज ने अपने दोस्त उस्मान के साथ मिलकर घटना को अंजमा दिया था। इसमें से रेशमा, धर्मराज और उस्मान को पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश करते हुए जेल भेज दिया है।

यह है मामला

आरोपित महिला का गुलरिहा क्षेत्र में मायका है उसने 14 अगस्त को फोन कर पति को बुलाया और घटना को अंजाम दिया पिपराइच के मुड़िला गांव से बेहोशी हाल में महिला का पति सुरेश बरामद हुआ तो पुलिस व स्वजन की मदद से उसे बीआरडी में भर्ती कराया गया जहां उसका उपचार चल रहा है उधर आरोपितों को गिरफ्तार कर पुलिस ने जेल भेज दिया

पिपराइच क्षेत्र के रहने वाले सुरेश निषाद की शादी दस वर्ष पहले गुलरिहा क्षेत्र की रहने वाली रेशमा से हुआ था। दोनों से तीन बच्चे भी हैं। सुरेश के पिता ने पुलिस को बताया है कि बेटी की पत्नी का उसके भाई के साले धर्मराज से प्रेम संबंध था। इसके कारण दोनों आए दिन उनके बेटे को धमकी देते थे। १२ अगस्त को बेटे की पत्नी को उसका भाई विदा कराकर मायके सरैया लेकर गया। १४ अगस्त को पत्नी और भाई के बुलाने उनका बेटा सुरेश ससुराल गया। जहां उसकी पत्नी, दोनों भाई और रिश्तेदार धर्मराज चारों मिलकर बेटे का सिर ईंट से कूच दिये। बेहोश होने पर उसे सरैया से लाकर पिपराइच के मुड़िला गांव में फेंक कर चले गये।

पुलिस की जांच में सामने आई ये बात

थाना प्रभारी पिपराइच नितिन रघुनाथ श्रीवास्तव ने बताया कि जांच में पता चला कि सुरेश की पत्नी का धर्मराज से काफी दिनों से प्रेम संबंध चल रहा था। रिश्तेदार होने की वजह से उसका सुरेश के घर आना-जाना लगा रहता था। धर्मराज को हिरासत में लेकर पूछताछ हुई तो घटना का पर्दाफाश हुआ। इसमें रेशमा के भाईयों का कोई हाथ नहीं है। वह अपने रिश्तेदार मो. उस्मान उर्फ अमर के साथ घटना को अंजाम दिया था। अमर बाइक से सुरेश को उसके घर से ले गया और शराब पिलाकर घटना को अंजाम दिया।

जनता को मुफ्त गैस सिलेंडर देगी योगी सरकार, सीधे खाते में जाएंगे 914 रुपये

लखनऊ। उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को दिवाली पर पैसा मिल सकता है। सिलेंडर के खुदरा मूल्य में केंद्र से मिलने वाली सब्सिडी घटाकर भुगतान का प्रस्ताव दिया गया है। उत्तर प्रदेश सरकार उज्ज्वला योजना के १.७५ करोड़ लाभार्थियों को दो निशुल्क एलपीजी सिलेंडर देने की जगह उनके बैंक खाते में पैसे डालने पर विचार कर रही है। एक सिलेंडर के लिए ६१४.५० रुपये का भुगतान होगा। पहली किस्त इसी दिवाली खाते में भेजने की योजना है। इसके लिए लाभार्थियों के बैंक एकाउंट को आधार से लिंक कराने की कार्रवाई तेज करने को कहा गया है।

सत्ताधारी दल भाजपा ने २०२२ के विधानसभा चुनाव में उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों को दो मुफ्त सिलेंडर का वादा किया था। ये होली व दिवाली पर दिए जाने हैं। चुनाव नतीजे आने के बाद दो बार होली व एक बार दिवाली बीत चुकी है। मगर, इस वादे पर अभी अमल का इंतजार है। इधर, तेजी से बढ़ती महंगाई और नजदीक आते लोकसभा चुनाव से पहले सरकार इस वादे पर अमल के फ र्मूले पर विचार कर रही है।

सूत्रों का कहना है कि सिलेंडर के खुदरा औसत मूल्य ११४४ रुपये में केंद्र सरकार से मिलने वाली २३० रुपये की सब्सिडी व बैंक विनिमय दर को घटाकर करीब ६१४.५० रुपये भुगतान पर सहमति बनी है। सरकार ने तय किया है कि योजना में लाभार्थियों के केवल आधार लिंक बैंक खातों में ही भुगतान किया जाएगा।

जेब में नहीं बचे रुपये तो जुए के दांव में लगा दी पत्नी

उत्तर प्रदेश के लखीमपुर जिले में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां छोटा भाई बड़े भाई के साथ जुआ खेल रहा था। जेब में रुपये खत्म हुए तो पत्नी को दांव पर लगा दिया। बड़ा भाई दांव जीत गया। अब छोटे भाई ने पत्नी को देने से इनकार किया तो मामला पंचायत पहुंचा। वहां भी हल नहीं निकला। वहीं विवाहिता पति से झगड़कर मायके चली गई।

लखीमपुर,संवाददाता। मोहम्मदी नगर के मुहल्ले में जुआ खेल रहे दो भाइयों में छोटा अपनी पत्नी को जुए में हार गया। मामले की जानकारी जब विवाहिता को हुई तो वह पति से लड़ झगड़कर मायके लौट आई और जानकारी परिवारीजन को दी। करीब एक महीना पहले का मामला निपटाने के लिए शनिवार को दोनों पक्षों के बीच समझौते को लेकर बैठक भी होने की संभावना है। आरोप है कि महिला का पति अपने बड़े भाई के साथ ताश खेल रहा था, तभी घर में काम करने वाले मजदूर ने छोटे लड़के से कहा कि तुम्हारे पास क्या है जो तुम जुए में रखोगे।

छोटे भाई ने जुए में अपनी पत्नी को दांव पर दिया और बड़ा भाई उसे जीत गया। जानकारी जब विवाहिता को हुई तो पति ने कहा कि हम दोनों मजाक कर रहे थे। इसके बाद पति-पत्नी में विवाद हो गया और विवाहिता मायके चली गई। उसने एक सप्ताह बाद परिवारीजन को मामले की जानकारी दी।

उसके घरवालों ने उसको काफी मारा पीटा और कहा तुमने यह बात पहले क्यों नहीं बताई। विवाहिता ने कहा कि मुझे मेरे पति ने काफी मारा-पीटा और धमकी दी की कि अगर किसी को बताया तो तुम्हें व तुम्हारे परिवारवालों को जान से मार देंगे। दंपति आपस में पहले से ही रिश्तेदार भी हैं। विवाहित १५ दिन से अपने मायके में रह रही है। दोनों पक्षों का मामला निपटाने के लिए पंचायत भी हो चुकी है, जिसमें आठ दिन का समय मांगा गया था, लेकिन मामला नहीं निपट सका। इंस्पेक्टर अम्बर सिंह ने बताया कि मामले की जानकारी नहीं है।

गोरखपुर में हादसा, स्कूल की गाड़ी से दबकर पांच साल की मासूम की मौत, इसी साल हुआ था छात्रा का दाखिला

गोरखपुर में हादसा, स्कूल की गाड़ी से दबकर पांच साल की मासूम की मौत, इसी साल हुआ था छात्रा का दाखिला

मुंडेरा बाजार (गोरखपुर), संवाददाता। गोरखपुर जिले के चौरी चौरा क्षेत्र के यदुवंश सिंह पार्वती इंटर कालेज इब्राहिमपुर की छात्रा रिया का स्कूल की गाड़ी से दबकर मृत्यु हो गई। वह कक्षा एक में पढ़ती थी। स्कूल की छुट्टी के बाद चालक बच्चों को मैजिक से छोड़ने के लिए निकला था। घर पहुंचने पर गाड़ी से नीचे उतरी मासूम वहीं खड़ी थी। बिना देखे चालक ने गाड़ी आगे बढ़ा दी और पिछले पहिये नीचे आने उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने गाड़ी को कब्जे में लेते हुए चालक को हिरासत में ले लिया है।

ये है मामला

कुसुली के रहने वाले विशाल की दो बेटियां हैं। इसमें पांच वर्षीय रिया सबसे बड़ी थी। इसी वर्ष उसका नाम इब्राहिमपुर स्थित इंटर कालेज में लिखवाया गया था। रिया के आने जाने के लिए उसके पिता ने स्कूल की ही गाड़ी तय कर दी थी, जिससे वह रोज आती

जाती थी। प्रतिदिन की तरह बुधवार की सुबह मां ने ने अपनी लाडली बेटी रिया को तैयार किया और गाड़ी आने पर उसे बाहर तक छोड़ने गयी। स्कूल की गाड़ी के चले जाने के बाद वह अंदर गयी, लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम था कि वह अपनी लाडली को दोबारा नहीं देख पाएंगी। दोपहर दो बजे स्कूल की छुट्टी होने के बाद स्कूल की गाड़ी का चालक सभी बच्चों को बैठाया और उन्हें घर छोड़ने के लिए निकला।

रिया के घर के पास भी वह पहुंचा और अंदर बैठे बच्चों द्वारा फाटक खोलने पर रिया नीचे उतरी लेकिन वहीं खड़ी रही। उधर, चालक बिना देखे लापरवाही पूर्वक गाड़ी आगे बढ़ा दिया, अगले हिस्से से ठोकर लगने से रिया नीचे गिर गई और गाड़ी का पिछला पहिया उसके ऊपर चढ़ गया। मौके पर ही रिया की मृत्यु हो गई। घटना की जानकारी होने पर रिया की मां समेत घर के लोगों का रो-रो कर बुरा हाल है। थाना प्रभारी सुधीर सिंह ने बताया कि तहरीर मिलने के बाद आगे की कार्रवाई होगी। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। चालक हिरासत में है।

घटना के बाद चालक ले गया था अस्पताल

पुलिस की हिरासत में आरोपित स्कूल की गाड़ी के चालक ने बताया कि घटना के बाद वह रिया को कंधे पर लेकर अस्पताल पहुंचा था, लेकिन चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। उधर, घटना की जानकारी के बाद स्कूल प्रशासन भी थाने पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली और अफसोस व्यक्त किया।

मामला गोरखपुर जिले के चौरा चौरा क्षेत्र की है छुट्टी के बाद मैजिक गाड़ी से चालक उसे घर छोड़ने गया था वहां नीचे उतरने के बाद मासूम छात्रा रिया गाड़ी के पास ही खड़ी थी उधर बिना देखे लापरवाहीपूर्वक चालक ने गाड़ी आगे बढ़ा दी जिससे बच्ची पहिए के नीचे दब गई और उसकी मौत हो गई मासूम की मौत से परिवार में कोहराम मचा है

राम मंदिर जैसा होगा जनक महल

इस बार संजय प्लेस में तीन नहीं पांच दिन सजेगी जनकपुरी

आगरा,संवाददाता। जनकपुरी महोत्सव इस वर्ष तीन नहीं, पांच दिन का होगा। जनक महल की थीम अयोध्या में बन रहे भगवान श्रीराम के मंदिर को समर्पित होगी। पूरा आयोजन होर्डिंग फ्री रहेगा। शुक्रवार को आयोजन समिति पदाधिकारियों ने बैठक कर यह महत्वपूर्ण निर्णय लिए।

संजय प्लेस में सजेगी जनकपुरी

जनकपुरी महोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष मुरारी प्रसाद अग्रवाल ने बताया कि इस वर्ष संजय प्लेस में जनकपुरी सजेगी। आयोजन को भव्य बनाने के प्रयास जारी हैं।

होर्डिंग फ्री रखा जाएगा आयोजन

समिति ने एक और निर्णय लिया है कि इस वर्ष आयोजन होर्डिंग फ्री रखा जाएगा, समिति पदाधिकारी व अन्य लोग क्षेत्र में किसी भी तरह के होर्डिंग नहीं लगाएंगे। ऐसा करने का उद्देश्य है कि मनमुटाव की स्थिति न बने और सभी नाम के स्थान पर श्रीराम के लिए निस्वार्थ भाव से काम करें।

श्रीरामलीला कमेटी से मिली अनुमति

जनकपुरी आयोजन समिति पदाधिकारी शुक्रवार को श्रीरामलीला कमेटी अध्यक्ष विधायक पुरुषोत्तम खंडेलवाल और महामंत्री राजीव अग्रवाल से मिले। उन्होंने जनकपुरी में स्वरूपों को दो के स्थान पर तीन दिन ठहराने की मांग थी, जैसा वर्ष १९९४ में तत्कालीन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के आने पर हुआ था। श्रीरामलीला कमेटी पदाधिकारियों ने अनुरोध स्वीकार करते हुए स्वरूपों के ११ से १३ अक्टूबर तक जनकपुरी में प्रवास के लिए हां कर दी।

क्षेत्रीय समस्याओं को कर रहे चिह्नित

जनकपुरी आयोजन करीब है और क्षेत्र में समस्याओं को अंबार लगा है। उन्हें दूर कराने के लिए आयोजन समिति रोजाना क्षेत्र का दौरा कर समस्याएं चिह्नित कर उन्हें अधिकारियों तक पहुंचा रही है। समिति पदाधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र में अधिकांश पार्किंग टूटी अवस्था में है, नालियां और सीवर चोक हैं, स्ट्रीट लाइट व्यवस्था ठीक नहीं, पेडों की कटाई होनी है। सभी समस्याओं को अधिकारियों के संज्ञान में लाकर दूर कराया जाएगा।

जनकपुरी महोत्सव इस बार तीन के स्थान पर 10 से 14 अक्टूबर तक पांच दिन का होगा।
10 अक्टूबर को श्रीराम बरात वाले दिन क्षेत्र में माता जानकी का डोला भ्रमण करेगा।
11 अक्टूबर को भगवान श्रीराम बरात का मिथला नगरी में भव्य स्वागत होगा।
तीन दिन विभिन्न कार्यक्रम के बीच भगवान मिथिलावासियों को दर्शन देंगे।
13 अक्टूबर को माता जानकी की विदाई होगी।
14 अक्टूबर को समिति सम्मान समारोह आयोजित करेगी।

श्रीराम मंदिर की तरह सजेगी जनकपुरी

अयोध्या में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर अगले वर्ष बनकर तैयार होगा इसलिए इस वर्ष जनक महल संजय प्लेस चौकी के पीछे स्थित पार्किंग में श्रीराम मंदिर थीम पर सजाया जाएगा इसे तैयार करने के लिए विभिन्न स्थानों के कलाकारों से चर्चा चल रही हैं इस बार का आयोजन होर्डिंग फ्री रखा जाएगा वहीं तीन दिन के स्थान पर पांच दिन तक आयोजन चलेगा

प्रेमिका की हत्या के चार साल बाद पकड़ा गया प्रेमी

रिपोर्ट आने के बाद पुलिस को मिली कामयाबी, वारदात में शामिल प्रेमी व सहयोगी गिरफ्तार
प्रेम प्रपंच में घटना का दिया था अंजाम, कोलककरहटा में बोरे में मिला था युवती का शव
आरोपितों की निशानदेही पर मृतका के शरीर पर रहे आभूषण व घटना में प्रयुक्त वाहन बरामद

आजमगढ़, संवाददाता। आजमगढ़ के फूलपुर कोतवाली पुलिस ने करीब चार साल पहले शहर कोतवाली के कोल ककरहा गांव में बोरे में मिले युवती के शव की बरामदगी के बाद पहचान के लिए कराई गई डीएनए टेस्ट रिपोर्ट की मदद से मंगलवार का घटना का राजफाश किया है। घटना में शामिल मृतका के प्रेमी व उसके सहयोगी को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी ने जुर्म कबूल कर लिया है।

नदी के किनारे बोरे में बंद मिला था युवती का शव

पुलिस ने पकड़े गए आरोपितों की निशानदेही पर मृतका के शरीर पर रहे आभूषण व घटना में प्रयुक्त चारपहिया वाहन बरामद कर लिया है। पुलिस लाइन सभागार में घटना के संबंध में एसपी सिटी शैलेंद्र लाल ने बताया कि तीन सितंबर २०१९ को शहर कोतवाली के कोल ककरहटा गांव के समीप तमसा नदी के किनारे बोरे में बंद अज्ञात युवती का शव बरामद किया गया था। शव की पहचान न होने से डीएनए टेस्ट के लिए गोरखपुर प्रयोगशाला को भेजा गया था।

पिता ने हत्या का संदेह जताते हुए दर्ज कराया मुकदमा

उधर, फूलपुर कोतवाली के ऊदपुर निवासी हरिकेश ने २३ जुलाई को चार वर्ष पूर्व लापता हुई २८ वर्षीय पुत्री सोनम को अगवा कर उसकी हत्या का संदेह जताते हुए सरायमीर थाना के कोलपुर कुशहां निवासी अश्विनी और उसके पिता बनारसी के विरुद्ध तहरीर दी थी। फूलपुर कोतवाली प्रभारी अनिल कुमार सिंह मामले की छानबीन में जुट गए। घटना पुरानी होने से जांच में जुटी पुलिस ने मृतका की शिनाख्त के लिए गोरखपुर स्थित प्रयोगशाला में भेजी गई रिपोर्ट के बारे में जानकारी ली, क्योंकि शव बरामदगी के दौरान फूलपुर कोतवाल अनिल कुमार सिंह उस दौरान शहर कोतवाली में तैनात रहे। उन्होंने प्रयोगशाला में भेजी गई जांच की पुष्टि के लिए माता-पिता का ब्लड सैंपल भी प्रयोगशाला भेजा, जहां मृतका और उसके स्वजन की रिपोर्ट से मिलान हो सके। मृतका की शिनाख्त फूलपुर कोतवाली के ऊदपुर निवासी हरिकेश की २८ वर्षीय पुत्री सोनम के रूप में हुई। पुलिस ने मृतका के पिता के संदेह जताने पर सरायमीर थाना के कोलपुर कुशहां निवासी अश्विनी को हिरासत में ले लिया। पूछताछ के दौरान पुलिस ने लगभग चार वर्ष पूर्व प्रेमप्रपंच के चलते हुई युवती की हत्या का पर्दाफाश कर दिया।

प्रेमी की शादी का रिश्ता टूटने पर रास्ते से हटाया

एएसपी शैलेंद्र लाल ने बताया कि आरोपित अश्विनी निवासी कोलपुर कुशहां थाना सरायमीर के गांव अक्सर सोनम का आना-जाना था। इसी दौरान अश्विनी से प्रेम प्रसंग शुरू हो गया। इसी बीच अश्विनी के परिवारवालों ने उसकी शादी तय कर दी और सोनम की वजह से यह रिश्ता टूट गया। अश्विनी और उसके पिता बनारसी ने सोनम को रास्ते से हटाने की योजना बनाई। इसके लिए अश्विनी ने अपने दोस्त सचिन निवासी ग्राम मुड़ियार थाना फूलपुर को शामिल कर लिया। अश्विनी ने २० अगस्त २०१९ को प्रेमिका सोनम को बुलाया और उसे सिधारी थाना क्षेत्र में किराए के मकान में रहने वाले रिश्तेदार के घर ले गया और वहां सोनम का गला घोंटकर मार डाला। इस घटना में शामिल अश्विनी उसके पिता और मित्र सचिन ने शव को बोरे में बंद कर निजामाबाद क्षेत्र में तमसा नदी में फेंक दिया। उसके बाद अश्वनी मुंबई चला गया था। सच्चाई उजागर होने के बाद पुलिस ने इस घटना में शामिल मृतका के प्रेमी अश्विनी और उसके दोस्त सचिन को गिरफ्तार कर लिया। इस वारदात में शामिल अश्विनी के पिता बनारसी की मौत हो चुकी है।

ऐसे हुआ था घटना चक्र

पुलिस के अनुसार, फूलपुर कोतवाली के ऊदपुर निवासी हरिकेश ने ११ सितंबर २०१९ को अपनी २८ वर्षीय पुत्री सोनम कुमारी की गुमशुदगी दर्ज कराई। सोनम २५ अगस्त २०१९ को घर से अचानक लापता हो गई थी। उस दौरान युवती की गुमशुदगी पिता ने फूलपुर कोतवाली में दर्ज कराई, लेकिन उसका पता नहीं चल पाया। युवती के पिता हरिकेश ने २३ जुलाई २०२३ को इस मामले में सरायमीर थाना क्षेत्र के कोलपुर ग्राम निवासी अश्विनी और उसके पिता बनारसी के विरुद्ध पुत्री को भगा ले जाने और उसकी हत्या कर देने का संदेह जताते हुए शिकायत दर्ज कराई। उसके बाद पुलिस हत्यारों तक पहुंच पाई।

गांवों में फिर मंडराने लगा बाढ़ का खतरा

बह गया दुकानों का सामान, बच्चे नंगे पैर स्कूल जाने को मजबूर

उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले में कुछ दिनों पूर्व बाढ़ के पानी से हुए नुकसान की अभी भरपाई भी नहीं हुई थी कि एक बार फिर से तिगरी में गंगा का जलस्तर बढ़ गया है। अब खतरे का निशान मात्र ९० सेमी दूर रह गया है। क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र में बरसात होने की वजह से गंगा के जलस्तर में बिजनौर बैराज से पानी छोड़ा जा रहा है।

संवाद सूत्र, गजरौला। कुछ दिनों पूर्व बाढ़ के पानी से हुए नुकसान की अभी भरपाई भी नहीं हुई थी कि एक बार फिर से तिगरी में गंगा का जलस्तर बढ़ गया है। अब खतरे का निशान मात्र ९० सेमी दूर रह गया है। क्योंकि पहाड़ी क्षेत्र में बरसात होने की वजह से गंगा के जलस्तर में बिजनौर बैराज से पानी छोड़ा जा रहा है। यही वजह है कि गंगा किनारे के गांवों में पानी भरने लगा है। खास बात है कि इस बार जिस हिसाब से गंगा के जलस्तर में बढ़ोतरी हो रही है। उस हिसाब से पानी का बहाव तेज होता जा रहा है। ग्रामीणों की मानें तो पानी गांव में घुस गया है। इससे दुश्वारियां बढ़ रही हैं। क्योंकि पानी गांवों के रास्तों में पहुंच गया है। खेत भी कई दिन से लबालब हैं। ऐसे में खेतों के रास्ते गुम होने की वजह से पशुओं के सामने चारा लाने की समस्या एक बार फिर गहरा रही है। गांव दारानगर, शीशोवाली, मंदिर वाली भुड्डी, सुल्तानपुर, टीकावोली इत्यादि के लोग खेतों पर आ-जा भी नहीं पा रहे हैं। ओसिता जगदेपुर में पूरी भैंसा-बुग्गी डूबने के बाद ग्रामीण खेतों की तरफ को बढ़ रहे हैं। स्कूली बच्चों को भी आने-जाने में परेशानी हो रही है। तिगरी में गंगा का बहाव में सामान भी बह गया। बाढ़ खंड विभाग के जेई अनवार बहादुर अली ने बताया कि शनिवार को गंगा का गेज २०१.१० सेमी पर पहुंच गया है। खतरे का निशान २०२.०० मीटर है। बिजनौर बैराज से एक लाख ४६ हजार क्यूसेक पानी छोड़ा गया है।

विधायक रमाकांत की सात मामलों में हुई पेशी

समाजवादी पार्टी के विधायक रमाकांत यादव की गुरुवार को अलग-अलग थानों में दर्ज सात मुकदमों में एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट में वर्चुअल पेशी हुई। जहरीली शराब पीने से हुई मौत के मामले में एक गवाह ने बयान दर्ज कराया। जबकि शेष छह मामलों में अदालत ने अगली तारीख निर्धारित की है। बता दें पूर्व सांसद रमाकांत यादव फतेहगढ़ जेल में बंद हैं।

आजमगढ़, संवाददाता। फतेहगढ़ जेल में बंद पूर्व सांसद और फूलपुर-पवई विधानसभा क्षेत्र के सपा विधायक रमाकांत यादव की गुरुवार को अलग-अलग थानों में दर्ज सात मुकदमों में एमपी-एमएलए स्पेशल कोर्ट में वर्चुअल पेशी हुई। जहरीली शराब पीने से हुई मौत के मामले में एक गवाह ने बयान दर्ज कराया। जबकि शेष छह मामलों में अदालत ने अगली तारीख निर्धारित की है।

जहरीली शराबकांड प्रकरण में गवाह का बयान दर्ज

फूलपुर कोतवाली क्षेत्र में जहरीली शराब पीने से हुई मौत के मामले में एक गवाह ने अपना बयान दर्ज कराया। २१ फरवरी २०२२ को फूलपुरके दक्खिनगावां के रामप्रीत की जहरीली शराब मौत हो गई थी। मामले में पंचनामा के गवाह महेंद्र की गवाही पूरी हो गई। अदालत ने गवाही पूरी होने पर अगले अगली तिथि २२ अगस्त निर्धारित की। वहीं, अहिरौला थाना के माहुल कस्बे में अपमिश्रित शराब बरामदगी के मुकदमें में आरोप तय किए जाने के मुद्दे पर बहस हुई। अदालत ने आदेश सुरक्षित रखते हुए मुकदमे में १९ अगस्त की तिथि निर्धारित की।

खातों की संख्या 50 करोड़ के पार पहुंची, शून्य बैलेंस अकाउंट के साथ मिलते हैं ये फायदे

जन धन खाते में शून्य बैलेंस के खाते खोले जाते हैं। इस निशुल्क डेबिट कार्ड के साथ ओवरड्राफ्ट की भी सुविधा मिलती है।

वित्त मंत्रालय की ओर से बताया गया है कि देश में धन जन खातों की संख्या 50 करोड़ को पार कर गई है। प्रधानमंत्री जन धन अकाउंट में शून्य बैलेंस खाते के साथ निशुल्क रुपे डेबिट कार्ड दिया जाता है। इस डेबिट कार्ड के साथ दो लाख रुपये का दुर्घटना बीमा भी मिलता है।

नई दिल्ली,। देशभर में जनधन खातों की संख्या ५० करोड़ के मार्क को पार कर गई है। बड़ी बात यह है कि इसमें से ५६ प्रतिशत खाते महिलाओं की ओर से खोले गए हैं। वित्त मंत्रालय द्वारा ये जानकारी दी गई। जनधन खातों के तहत शून्य बैलेंस वाले खाते बैंकों की ओर से खोले जाते हैं, जिसमें डेबिट कार्ड के साथ ओवरड्राफ्ट जैसी सुविधाएं खाताधारकों को दी जाती हैं।

67 प्रतिशत जन धन खाते ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में

मंत्रालय की ओर से जारी किए गए बयान में कहा गया कि जन धन स्कीम के तहत खोले गए ६७ प्रतिशत खाते ग्रामीण और अर्ध-शहरी इलाकों में हैं।

2.03 लाख करोड़ से ज्यादा रुपये जमा

जन धन खातों में २.०३ लाख करोड़ रुपये से अधिक जमा है और ३४ करोड़ रुपे डेबिट कार्ड इन अकाउंट्स पर जारी किए गए हैं। प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत खोले गए बैंक खातों में औसत बैलेंस ४,०७६ रुपये है। इसमें ५.५ करोड़ खातों पर डीबीटी का लाभ मिल रहा है।

2014 में लान्च हुई थी स्कीम

केंद्र सरकार की ओर से प्रधानमंत्री जन धन योजना को २८ अगस्त, २०१४ को शुरू किया गया था। इसके जरिए सरकार बड़े स्तर पर कमजोर वर्ग को बैंकिंग सिस्टम से जोड़ने में सफल रही है। प्रधानमंत्री जन धन योजना के कारण ही सरकार सीधे डीबीटी के जरिए लाभार्थियों को लाभ पहुंचाने में सफल हुई है। कुछ दिनों पहले वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि पिछले नौ सालों में डीबीटी के जरिए सरकार २.७३ लाख करोड़ रुपये बचाने में सफल हुई है।

जन धन खाते में मिलते हैं कई फायदे

प्रधानमंत्री जन धन अकाउंट में शून्य बैलेंस खाते के साथ निशुल्क रुपे डेबिट कार्ड दिया जाता है। इस डेबिट कार्ड के साथ दो लाख रुपये का दुर्धटना बीमा भी मिलता है। इसके अलावा १० हजार रुपये की ओवरड्राफ्ट की भी सुविधा मिलती है।

ढाई से तीन हजार फीट की ऊंचाई पर फट रहे बादल

न्यूज डेस्क। हिमाचल और उत्तराखंड में लगातार हो रही भारी बारिश और तबाही से हालात बद से बदतर होते जा रहे हैं। इन हालातों के बीच बादलों के फटने का जो नया ट्रेंड सामने आया है, उससे वैज्ञानिक न सिर्फ चिंतित हैं, बल्कि भारी तबाही की भी आशंका जता रहे हैं। मौसम वैज्ञानिकों के मुताबिक मानसून के वक्त तकरीबन पांच से छह हजार फीट की ऊंचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में बादलों के फटने की घटनाएं होती थी। इतनी ऊंचाई वाले पहाड़ों पर शिमला और नैनीताल जैसे शहर शामिल हैं। बीते दो दिनों से लगातार हो रही बारिश और क्लाउडबर्स्ट में यह ऊंचाई पांच और छह हजार फीट की ऊंचाई से खिसक कर ढाई से तीन हजार फीट पर आ गई है। जो फिलहाल चिंता का कारण बनी हुई है।

मौसम विभाग के वैज्ञानिकों समेत आपदा प्रबंधन से जुड़े विशेषज्ञ लगातार पहाड़ों पर हो रही बारिश और बचाव को लेकर अपनी तैयारी और प्रबंधन में लगे हुए हैं। मौसम विभाग के वरिष्ठ वैज्ञानिक राजीव तनेजा कहते हैं कि जिस तरीके से हिमाचल प्रदेश में बारिश से तबाही मची हुई है उसका एक बड़ा कारण निचली ऊंचाई पर बादलों का फटना भी है। वो कहते हैं कि अमूमन बादलों के फटने की प्रक्रिया छह हजार फीट से गुजरने वाले बादलों में होती थी, लेकिन हिमाचल में रविवार से बिगड़े मौसम के बाद सोमवार को जब बादलों के फटने का सिलसिला शुरू हुआ तो इनकी ऊंचाई महज ढाई से तीन हजार फिट तक पहुंच गई। वह कहते हैं कि हिमाचल के कांगड़ा की ऊंचाई तीन हजार फीट से कम है। सोमवार को कांगड़ा की बलोह पंचायत क्षेत्र में बादल फट गया। इस वजह से यहां पर कुछ मकान गिर भी गए और कई मकान क्षतिग्रस्त भी हो गए। वो कहते हैं कि इतनी कम ऊंचाई पर बादलों के फटने की घटना अमूमन न के बराबर या बहुत कम ही होती हैं।

मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि सिर्फ हिमाचल के कांगड़ा जिले ही नहीं बल्कि सोलन जिले के निचले हिस्से में भी बादलों के फटने का सिलसिला जारी है। मौसम वैज्ञानिक राजीव तनेजा बताते हैं कि बादलों के फटने का सिलसिला कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ज्यादा खतरनाक हो सकता है। उनका कहना है कि अमूमन पहाड़ों पर आबादी तो हर हिस्से में होती ही है लेकिन सबसे ज्यादा आबादी पहाड़ के शुरुआती चार हजार फीट की ऊंचाई वाले हिस्सों में भी भी खूब होती है। ऐसे में अगर बादलों के फटने का सिलसिला कम ऊंचाई पर होगा तो ज्यादा से ज्यादा आबादी प्रभावित होगी और खतरा बढ़ेगा। वह बताते हैं कि हिमाचल से लेकर उत्तराखंड में बारिश ने बीते कुछ दिनों में कुछ ऐसे ही बादल फटने के ट्रेंड दिखाने शुरू किए है। उनकी चिंता इस बात को लेकर है अगर यह सिलसिला लगातार चला तो कहीं कोई बड़ी तबाही ना आ जाए।

मौसम विभाग के आकलन के मुताबिक हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड समेत जम्मू कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में भारी बारिश और बादलों के फटने का अनुमान लगाया गया था। हिमाचल प्रदेश में अ रेंज अलर्ट के बीच भारी बारिश से तबाही का दौर शुरू हो गया है। राज्य में जगह जगह बादल फटने व भूस्खलन से अब तक २३ से अधिक लोगों की मौत की सूचना राज्य को मिली है। जबकि कई लापता है। हिमाचल प्रदेश आपातकालीन परिचालन केंद्र के अनुसार आपदा के कारण राज्य में ७५२ सड़कें बंद हैं। इसी तरह उत्तराखंड में भी लगातार नदियों का जलस्तर बढ़ता जा रहा है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक उत्तराखंड में लगातार हो रही बारिश से यहां की एक दर्जन से ज्यादा नदियां और उनकी सहायक नदियों में पानी खतरे के निशान से बहुत ऊपर बेहतर तबाही मचा रहा है। मौसम विभाग के अधिकारियों का कहना है कि उत्तराखंड में भी अभी अगले कुछ दिनों तक लगातार बारिश का अनुमान बना हुआ है।

पहाड़ों पर बादल फटने और लगातार बारिशों के साथ मची तबाही को लेकर मौसम विभाग ने राज्यों में एक बार फिर से सोमवार को अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के मुताबिक उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू कश्मीर के ऊपरी हिस्से समेत न र्थ ईस्ट के कुछ पहाड़ी इलाकों पर साइक्लोनिक परिस्थितियों की वजह से बादल फटने और ज्यादा से ज्यादा बारिश होने का अनुमान लगाया जा रहा है। पहाड़ों पर मौसम को लेकर बिगड़े हालातों के चलते केंद्रीय गृह मंत्रालय की आपदा प्रबंधन से जुड़ी एजेंसियां न सिर्फ अलर्ट पर हैं, बल्कि लगातार राज्यों से संपर्क में आ गई हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, बीते कुछ सालों में यह पहला मौका है जब लगातार श्क्लाउडबर्स्टश की घटनाएं न सिर्फ बढ़ रही हैं बल्कि राज्यों को चेतावनियां जारी की जा रही हैं।

मौसम विभाग एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक हिमाचल प्रदेश के कुल्लू, मंडी, बिलासपुर, हमीरपुर, चंबा, कांगड़ा और शिमला समेत सोलन जिले के ऊपरी हिस्से में लगातार बारिश और बादल फटने का अनुमान लगाया गया था, लेकिन इन जिलों के ऊपरी हिस्सों के अलावा कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भी बादल फटने की घटनाएं सामने आई हैं। मौसम विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी बताते हैं कि बीते कुछ सालों में यह पहला मौका है, जब हिमाचल प्रदेश के इन इलाकों में बीते कुछ महीनो के दौरान लगातार गंभीर परिस्थितियों की एडवाइजरी जारी की गई है ऊंचाई पर बादल फटने लगे। मौसम विभाग के महानिदेशक मृत्युंजय महापात्रा कहते हैं कि पहाड़ों में जिस तरीके के हालात बने हैं, उसको लेकर पहले से ही आगाह किया जा चुका है। खासतौर से हिमालयन रीजन में मौसम की ऐसी मार अगले तीन दिनों तक बनी रहने की संभावना है।

आईएएस बनने के लिए हरि चंदना दसारी छोड़ी लंदन की नौकरी, दूसरे प्रयास में पूरा हुआ सपना

पढ़ाई पूरी करने के बाद हरि चांदना को लंदन में ही विश्व बैंक में नौकरी लग गई यहां कुछ समय तक काम करने के बाद उन्होंने बीपी सेल के साथ काम किया हालांकि जाब करते वक्त उनका ज्यादा मन इसमे लग नहीं पाया इसलिए उन्होंने यह जाब छोड़कर भारत वापस लौट आईं यहां आकर उन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी

एजुकेशन डेस्क।आईएएस बनने की चाह में देश के लाखों युवा यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा में शामिल होते हैं। इनमें से हर कोई अलग-अलग बैकग्राउंड के होते हैं। कभी-कभी तो कोई देश या विदेश में शानदार पैकेज पर काम कर रहे युवा नौकरी छोड़कर इस परीक्षा में बैठते हैं।

आज सक्सेस स्टोरी क लम में हम आपको एक ऐसी शख्सियत के बारे में जानकारी देने जा रहे हैं, जिन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा के लिए लंदन की नौकरी छोड़ दी। इस शख्सियत का नाम है हरि चंदना दसारी। हरि चंदना ने दूसरे प्रयास में UPSC परीक्षा क्रैक करके अपना ै। बनने का सपना पूरा किया। आइए डालते हैं इनके सफर पर एक नजर।

हरि चांदना दसारी की पढ़ाई-लिखाई हैदराबाद और तेलंगाना से पूरी हुई हैं। उन्होंने हैदराबाद विश्वविद्यालय से पीजी की डिग्री हासिल की है। पीजी की डिग्री लेने के बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई विदेश से करने

का फैसला लिया। इसके बाद, उन्होंने लंदन स्कूल अ फ इकन मिक स से जाकर आगे की पढ़ाई की।

लंदन में मिली शानदार नौकरी

पढ़ाई पूरी करने के बाद हरि चांदना को लंदन में ही विश्व बैंक में नौकरी लग गई। यहां कुछ समय तक काम करने के बाद उन्होंने बीपी सेल के साथ काम किया। हालांकि ज ब करते वक्त उनका ज्यादा मन इसमे लग नहीं पाया। दरअसल, चांदना अपने आईएएस पिता से काफी प्रभावित थीं। इसलिए वे भी चाहती थीं उनकी तरह वे समाज सेवा करें। समाज कल्याण में अपना योगदान दें। इसलिए उनका दिल ज ब में नहीं लगा।

शुरू की UPSC की तैयारी

हरि चांदना दसारी लंदन की नौकरी छोड़कर भारत वापस लौट आईं। यहां आकर उन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी। उन्होंने सटीक रणनीति बनाई। नोट्स बनाए थे। हालांकि पहले प्रयास में उन्हें सफलता नहीं मिली। इसके बाद भी उन्होंने हार नहीं मानी।

सेकेंड अटेम्प्ट में पाई सफलता

पहले प्रयास में असफल होने के बाद भी हरि चांदना अपने लक्ष्य से भटकी नहीं। वे डटी रहीं। अपनी कमजोरियों पर काम करती रहीं। इसका नतीजा यह हुआ है कि दूसरे प्रयास में उन्होंने परीक्षा में सफलता हासिल कर ली। इस तरह उन्होंने अपना सपना पूरा कर लिया।

बरेली। नवाबगंज कस्बा में बिजौरिया रोड पर गैस एजेंसी के सामने रहने वाले युवक ब्रजनंदन (२४) ने फंदे से लटककर जान दे दी। मरने से पहले उसने सुसाइड नोट भी लिखा। इसमें पत्नी को मौत का जिम्मेदार बताया है। पत्नी के किसी दूसरे युवक से संबंध बताए हैं। मृतक के पिता की तहरीर पर आरोपी पत्नी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। मूल रूप से थाना हाफिजगंज के गांव अल्हैया के मजरा टांडा निवासी ब्रजनंदन ने पांच साल पहले आशा के साथ प्रेम विवाह किया था। आशा पहले से शादीशुदा थी। आशा का पहला पति ब्रजनंदन का चचेरा भाई था। ब्रजनंदन नवाबगंज कस्बे में एक टेंट की दुकान पर काम करता था। पत्नी ब्यूटीशियन का कोर्स कर रही है। बिजौरिया रोड पर गैस एजेंसी गोदाम के पास मकान बनवाकर दोनों रह रहे थे। बृहस्पतिवार रात खाना खाने के बाद वह सो गया। पत्नी दूसरे कमरे में सो रही थी। सुबह जब वह जागी तो ब्रजनंदन का शव फंदे से लटका हुआ था। सूचना पर पुलिस भी पहुंच गई। पुलिस को कमरे में एक सुसाइड नोट भी मिला। इसमें ब्रजनंदन ने पत्नी को मौत का जिम्मेदार बताया। उसने लिखा कि पत्नी किसी युवक से बात करती है। वह आए दिन हत्या करवाने की धमकी देती है। सुसाइड में पत्नी के मोबाइल नंबर की काल डिटेल निकलवाने के साथ व्हाट्सएप और इंस्टाग्राम आईडी की जांच कराने को कहा गया है। शव मिलने की सूचना पर गांव से परिजन भी पहुंच गए। सुसाइड नोट में लिखा है, मैं बृजनंदन आत्महत्या अपनी पत्नी की वजह से कर रहा हूं, क्योंकि ये किसी से बात करती है। मुझे धमकी देती है कि तुझे मरवा दूंगी। आशा का व्यवहार और आदत बहुत गलत है। इसे तो पत्नी कहते घिन सी आने लगी है। इसलिए मैं आत्महत्या कर रहा हूं।

एल्विश यादव ने मनोहर लाल खट्टर से की मुलाकात

बिग बास ओटीटी सीजन 2 के विनर एल्विश यादव एक बार फिर चर्चा में बने हुए हैं। शो खत्म होने के बाद अब वो अपने घर लौट चुके हैं। एल्विश यादव ने हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर से मुलाकात की जिसकी एक झलक सोशल मीडिया पर साझा की है।

नई दिल्ली। अभिषेक बच्चन और सैयामी खेर की स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म घूमर पिछले कई दिनों से चर्चा में बनी हुई है। अब शुक्रवार को फिल्म थिएटर्स में रिलीज कर दी गई है। वहीं, बिग बास ओटीटी विनर एल्विश यादव अभी भी चर्चा में बने हुए हैं। अब उन्होंने हरियाणा के मुख्यमंत्री से मुलाकात की है।

रिलीज हुई अभिषेक बच्चन की घूमर

अभिषेक बच्चन और सैयामी खेर की फिल्म घूमर शुक्रवार को रिलीज हो गई है। आर बाल्की के डायरेक्शन में बनी घूमर एक स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म है। अब फिल्म को लेकर लोगों के रिव्यू भी आने लगे हैं। घूमर की कहानी, एक्टर्स की परफ मेंस और फिल्म का स्क्रीनप्ले दर्शकों को पसंद आ रहा है। फिल्म देखने गए कई दर्शकों ने माइक्रो ब्लागिंग साइट (ट्विटर) पर अपना रिव्यू दिया है और तारीफ की है। घूमर में अभिषेक बच्चन की भी उनकी शानदार अदाकारी के लिए प्रशंसा हुई है।

एल्विश यादव ने हरियाणा सीएम मनोहर लाल खट्टर से की मुलाकात

बिग बास ओटीटी सीजन २ के विनर बने एल्विश यादव अब अपने शहर गुरुग्राम पहुंच चुके हैं। शुक्रवार को विनर ने हरियाणा के सीएम मनोहर लाल खट्टर से मुलाकात की, जिसकी एक झलक सोशल मीडिया पर साझा की है। सीएम मनोहर लाल खट्टर ने एल्विश यादव के साथ इस मुलाकात की एक तस्वीर ट्विटर पर शेयर करते हुए लिखा, 'हरियाणवियों का दबदबा हर क्षेत्र में जारी है।

इंडिया के सबसे ज्यादा पापुलर सिंगर बने अरिजीत सिंह

मौजूदा समय में किसी एक ऐसे गायक का जिक्र किया जाए, जिसके गानों के लोग दीवाने हैं। तो इस मामले में बालीवुड सिंगर अरिजीत सिंह का नाम जरूर शामिल होगा। अपनी करिश्माई आवाज के चलते अरिजीत गानों में जान फूंक देते हैं। इस बीच अब इनके फैंस के लिए बड़ी खुशखबरी सामने आ रही है। अरिजीत सिंह आनलाइन म्यूजिक ऐप स्प टिफाई पर इंडिया के सबसे ज्यादा पापुलर सिंगर बन गए हैं। फालोअर्स के मामले में इन्होंने फेमस इंटरनेशनल सिंगर रिहाना जैसे कई गायकों को पीछे छोड़ दिया है।

ओटीटी पर रिलीज हुईं ये फिल्में और सीरीज

बाक्स आफिस पर गदर २ और ओएमजी २ पहले से धमाल मचा रही हैं। इस शुक्रवार अभिषेक बच्चन की धूमर ने भी दोनों को ज्वाइन कर लिया है। थिएटर्स के साथ ओटीटी स्पेस में भी कई फिल्में और सीरीज रिलीज हुई हैं। इनमें से कुछ साउथ भाषाओं की भी हैं। इस वीकेंड ओटीटी प्लेटफ र्मस ने भी मनोरंजन देने के लिए कमर कस ली है। दर्शकों के लिए अगस्त का यह तीसरा हफ्ता धमाकेदार साबित होने वाला है। चलिए, आपको बताते हैं कि किस प्लेटफ र्म पर क्या आ रहा है।

गदर 2 के आगे पठान और सुल्तान हुए निढाल

सनी देओल की गदर २ के लिए दर्शकों का क्रेज साफ देखने को मिल रहा है। थिएटर्स में फैंस ट्रेक्टर की सवारी करते हुए पहुंच रहे हैं और सनी देओल को दिल खोलकर प्यार दे रहे हैं, जो बाक्स आफिस के कारोबार में साफ झलक रहा है। गदर २ रिलीज के साथ बाक्स आफिस पर अपना डंका बजा रही है और कई रिकार्ड तोड़ने की होड़ में है। अब फिल्म ने शाह रुख खान की पठान और सलमान खान की सुल्तान को भी पछाड़ दिया है।

इंडिया छोड़ विदेशों में बस चुकी हैं टीवी की ये अभिनेत्रियां

शादी कर अभिनय से कर लिया है किनारा

एंटरटेनमेंट डेस्क । बालीवुड की तरह टीवी सेलेब्स भी दर्शकों के बीच काफी लोकप्रियता बटोरते हैं। फैंस अपने फेवरेट सेलेब्स के बारे में सब कुछ जानने के लिए बेताब रहते हैं। हालांकि, महिला कलाकारों के लिए अपना करियर बनाना हमेशा ही मुश्किल रहा है। ऐसे में छोटे पर्दे पर कुछ ऐसी अभिनेत्री भी रही हैं, जिन्होंने अच्छे खासे करियर को लात मारकर इंडस्ट्री से दूरी बना ली है। आज के इस लेख में हम आपको उन हसीनाओं के बारे में बताने जा रहे हैं, जो भारत को छोड़ विदेश में जा बसी हैं।

एरिका फर्नांडिस

टीवी की जानी मानी अभिनेत्री एरिका फर्नांडिस अपने अभिनय की नहीं बल्कि अपनी खूबसूरती के लिए भी काफी जानी जाती हैं। पिछली बार एरिका को 'कसौटी जिंदगी' में प्रेरणा के किरदार में देखा गया था। दर्शकों ने इस शो को काफी पसंद किया था। हालांकि, कोरोना के आने के बाद इस सीरियल को बंद कर दिया गया। आपको बता दें कि एरिका अब भारत छोड़कर दुबई में रहने लगी हैं।

रुचा हसबनीस

सीरियल साथ निभाना साथिया से टीवी जगत में अपनी पहचान बनाने वाली रुचा हसबनीस ने भी अभिनय से दूरी बना ली है। हालांकि, अभिनेत्री ने अपनी करियर तबदांव पर लगाया, जब उन्हें कई सारे शोज के अ फर आ रहे थे। इस सीरियल के बाद रुचा ने शादी की और यूएस में जाकर बस गईं। अब अभिनेत्री अपना सारा समय अपने परिवार को दे रही हैं।

मिहिका वर्मा

मिहिका वर्मा छोटे पर्दे की जानी मानी अभिनेत्री हैं। मिहिका सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं और अपने फैंस से काफी कनेक्ट रहती हैं। मिहिका को शो 'ये हैं मोहब्बतें' से दर्शकों के बीच लोकप्रियता हासिल हुई थी। मिहिका ने शादी के बाद अभिनय छोड़ दिया और विदेश में बस गई हैं।

निकी अनेजा

निकी अनेजा ने भले ही इंडस्ट्री से दूरी बना ली है, लेकिन फैंस आज भी उनके अभिनय की खूब सराहना करते हैं। निकी एक समय टीवी इंडस्ट्री पर राज करती थीं, लेकिन शादी के बाद उन्होंने अभिनय से दूरी बना ली है और विदेश में बस गई हैं।

साउथ स्टार्स ने बालीवुड पर दिए बयान किसी ने एक्ट्रेस पर उठाया सवाल तो किसी ने भाषा पर कही यह बात

एंटरटेनमेंट डेस्क। बीते साल साउथ बनाम बालीवुड में तगड़ी बहस देखने को मिली थी। किच्चा सुदीप के एक बयान से शुरू हुई यह बहस लंबी चली थी और आज भी कभी न कभी इसपर बात हो ही जाती है। बीते कुछ दिनों में दक्षिण भारत की फिल्में श्पुष्पा द राइज, केजीएफ चैप्टर २ और आरआरआर सिनेमाघरों में रिलीज हुईं। इन फिल्मों को देखने के बाद ही लोगों का कहना है कि बालीवुड अब साउथ सिनेमा के आगे फीका पड़ रहा है। वहीं कुछ साउथ सितारों का कहना है कि बालीवुड उनको अफोर्ड नहीं कर सकता है, वहीं किसी को बालीवुड में आउटसाइडर की तरह फील होता है। अब हाल ही में राणा दग्गुबाती ने सोनम कपूर को लेकर भी बयान दिया है जिसपर चर्चा हो रही है। तो चलिए आपको उन साउथ सितारों के बारे में बताते हैं जिन्होंने बालीवुड को लेकर अजीबो-गरीब बयान दिए हैं।

राणा दग्गुबाती

राणा दग्गुबाती ने हाल ही में बिना नाम लिए सोनम कपूर पर निशाना साधा है। राणा ने कहा कि दुलकर सलमान एक हिंदी फिल्म की शूटिंग कर रहे थे। यह शूटिंग मेरे घर के पास हो रही थी तो मैं सबसे मिले चला गया। उस वक्त मैंने देखा कि हिंदी फिल्मों की एक मशहूर एक्ट्रेस लंदन में अपने लाइफ पार्टनर के साथ श पिंग की बातों में बिजी थीं। वह काम पर ध्यान नहीं दे रही थीं और श ट्स अच्छे नहीं हो रहे थे। इसी बयान पर बवाल मचा हुआ है।

महेश बाबू

महेश बाबू से से कई बार ब लीवुड में डेब्यू पर सवाल किया जा चुका है और ऐसा ही फिल्म 'मेजर' के ट्रेलर इवेंट में भी हुआ था। लेकिन इस मौके पर महेश बाबू ने हिंदी सिनेमा में आने के लिए साफ इनकार कर दिया और कहा कि ब लीवुड वाले उन्हें अफोर्ड नहीं कर सकते। अभिनेता ने कहा, 'मैं ऐसी इंडस्ट्री में काम करने में अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहता जो मुझे अफोर्ड नहीं कर सकते। मुझे यहां जो सम्मान मिलता है वह बहुत है।

प्रियामणि

प्रियामणि फिल्म चेन्नई एक्सप्रेस के गाने 'लेट्स आन द डांस फ्लोर' और वेब सीरीज 'द फैमिली मैन' में नजर आ चुकी हैं। अभिनेत्री ने एक बार ब लीवुड फिल्मों में दक्षिण भारतीय की छवि को लेकर कहा था, 'लोगों के बीच अब साउथ स्टार्स मशहूर हो रहे हैं। वहां के टैलेंट को पसंद किया जा रहा है। एक समय था, जब श्रीदेवी, रेखा, हेमा मालिनी और वैजयंतीमाला ब लीवुड पर राज करती थीं। लेकिन उनके बाद साउथ का कोई एक्टर उनके जैसा दिखाई नहीं दिया। हमने सिर्फ बालीवुड में हिंदी बोलने वाले लोगों को देखा है। ये लोग साउथ इंडियन स्टार्स को इस तरह दिखाते थे कि उन्हें ठीक से हिंदी बोलनी बिल्कुल भी नहीं आती है। हमारी भाषा का मजाक उड़ाते हुए कहते थे अइयो, कैसा जी, क्या बोलता जी।'

श्रुति हासन

श्रुति हासन कई हिंदी फिल्मों में नजर आ चुकी हैं लेकिन उन्होंने अपने एक बयान में बताया था कि ब लीवुड में उन्हें एक आउटसाइडर की तरह लगता है। अभिनेत्री ने कहा था, 'मुझे ब लीवुड में हमेशा ही एक आउटसाइडर जैसा महसूस हुआ। यहां हमेशा ही न र्थ और साउथ वाली चीजें होती हैं। मान लीजिए कि मैं एक साथ तीन तेलुगू और तमिल फिल्में कर रही हूं तो वहां के लोग कहते हैं कि तुम हिंदी पर ध्यान नहीं दे रही हो। जैसे देश में सिर्फ वही एक इंडस्ट्री है।

यश

'केजीएफ' की सफलता के बाद यश पैन इंडिया स्टार बन गए हैं। एक बार सलमान खान ने सवाल किया था कि साउथ की फिल्में बालीवुड में कैसे अच्छा परफार्म कर रही हैं? इस पर यश ने प्रतिक्रिया दी थी और बताया था कि उनकी फिल्मों को पहले यहां अच्छा रिस्प न्स नहीं मिलता था लेकिन बालीवुड में साउथ की रीमेक बनने लगी, जिससे लोगों को वहां के सिनेमा के बारे में पता चला। अब लोग साउथ सिनेमा के बारे में जानने लगे हैं। यह सब रातों-रात नहीं हुआ है। इसमें कई साल लगे हैं।

शोएब अख्तर ने रोहित की कप्तानी क्षमता को लेकर सवाल खड़े किए

स्पोर्ट्स डेस्क। अख्तर ने बताया कि एक कप्तान के लिए दबाव झेलना और अपनी टीम को अच्छा प्रदर्शन करने में मदद करना कितना महत्वपूर्ण है। भारत को प्ब खिताब जीतने में मदद करने वाले आखिरी कप्तान एमएस धोनी थे। अख्तर ने बताया कि रोहित-विराट किस प्रकार धोनी से अलग हैं। जैसे-जैसे वनडे वर्ल्ड कप नजदीक आ रहा है, फैंस के उत्साह का स्तर बढ़ता जा रहा है। भारतीय टीम पिछले १० वर्षों से आईसीसी ट्र फी नहीं जीत पाई है। पिछली बार २०१३ में भारत ने चौंपियंस ट्र फी का खिताब जीता था। ऐसे में कप्तान रोहित शर्मा और टीम मैनेजमेंट पर भारत को ट्र फी दिलाने की जिम्मेदारी होगी। उसमें भी वर्ल्ड कप भारतीय जमीन पर खेला जा रहा है, तो कप्तान रोहित इसका दबाव भी महसूस कर रहे होंगे।

पिछले कुछ समय में जिस तरह से चीजें घटित हुई हैं, उसमें भारतीय टीम की क्षमताओं पर भी सवाल खड़े हो रहे हैं। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने भी टीम इंडिया के कप्तान रोहित की क्षमताओं पर सवाल खड़े किए हैं। उन्होंने मामला समझाते हुए महेंद्र सिंह धोनी का भी उदाहरण दिया।

फैंस का टीम इंडिया पर काफी दबाव होगा

बैकस्टेज विद बोरियाशो में बात करते हुए शोएब अख्तर ने स्वीकार किया कि विश्व कप में भारतीय टीम पर भारी दबाव रहने वाला है क्योंकि फैंस को उनसे ट्र फी से कम की उम्मीद नहीं है। अख्तर ने कहा, ष्सबसे पहली बात, यह वह दबाव है जो फैंस टीम पर डालते हैं। इस तरह के दबाव के साथ खेलना लगभग असंभव है। जैसा कि मैंने आपको बताया फैंस यह मानते हैं कि आप हार नहीं सकते। भगवान न करे कि टीम इंडिया हारे, लेकिन अगर ऐसा होता है तो टीम पर हमलों की बौछार हो जाएगी।

शोएब अख्तर ने धोनी की तारीफ की

अख्तर ने बताया कि एक कप्तान के लिए दबाव झेलना और अपनी टीम को अच्छा

प्रदर्शन करने में मदद करना कितना महत्वपूर्ण है। भारत को प्ब खिताब जीतने में मदद करने वाले आखिरी कप्तान एमएस धोनी थे। जहां तक रोहित की बात है तो अख्तर को लगता है कि रोहित दबाव पड़ने पर घबरा जाते हैं और दबाव को अपने ऊपर हावी होने देते हैं।

रोहित पर दबाव दिखता है

अख्तर ने कहा- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आपके पास पहले ऐसा व्यक्ति था जो सभी दबावों को सहन कर सकता था और अपने खिलाड़ियों को इससे उबरने में मदद करता था। वह अपने साथियों को दबाव महसूस नहीं होने देता था, और यह एमएस धोनी के बारे में सबसे अच्छी बात थी। आपने उनके नेतृत्व में २००७ विश्व टी२० जीता, २०११ विश्व कप और फिर २०१३ चैपियंस ट्राफी अपने नाम की। जैसे ही धोनी ने कप्तानी छोड़ी भारत के लिए चीजें खराब हो गईं। जब मैं रोहित को देखता हूं, तो मैं खुद से यह सवाल पूछता रहता हूं कि क्या उन्हें कप्तानी स्वीकार करनी चाहिए थी? मुझे लगता है कि रोहित कई मौकों पर घबराहट महसूस करते हैं और दबाव को अपने ऊपर हावी होने देते हैं। कप्तानी का दबाव आपको कमजोर कर देता है और विराट कोहली के साथ भी ऐसा ही हुआ। यही कारण है कि टीम इंडिया कोई बड़ा टूर्नामेंट नहीं जीत पाती।

हिटमैन कोहली से भी ज्यादा टैलेंटेड

हालांकि, रावलपिंडी एक्सप्रेस का यह भी कहना है कि हिटमैन के पास एक टीम है जो विश्व कप जीत सकती है। रावलपिंडी एक्सप्रेस ने कहा- इसमें कोई दो राय नहीं कि रोहित के पास विश्व कप जीतने वाली टीम है। एक बल्लेबाज के रूप में वह शायद विराट कोहली से भी अधिक टैलेंटेड हैं। वह एक क्लासिक बैटर हैं और जिस तरह के श ट्स वह खेलते हैं वह आश्चर्यजनक है। हालांकि, कप्तानी के साथ क्या वह ऐसा करने में सक्षम हैं? उसे मुझे और हम सभी को गलत साबित करने दीजिए, क्योंकि इस विश्व कप में पूरा भारत उनसे यही चाहेगा।

भारतीय ब्लाइंड क्रिकेट टीम की मदद को आगे आया इंग्लैंड, बर्मिंघम वर्ल्ड गेम्स 2023 से पहले दिखाई दरिया दिली

खेल डेस्क। भारतीय मेंन्स और महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम शुक्रवार से शुरू होने वाले इंटरनेशनल ब्लाइंड स्पोर्ट्स फेडरेशन के बर्मिंघम वर्ल्ड गेम्स २०२३ के लिए गुरुवार को बर्मिंघम विश्वविद्यालय के विश्व खेल गांव पहुंच गई। यहां भारतीय महिला टीम अपने अभियान की शुरुआत २० अगस्त को आस्ट्रेलिया के खिलाफ करेगी जबकि पुरुष ब्लाइंड टीम उसी दिन चिरप्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी। अधिकारियों को इंग्लैंड क्रिकेट को धन्यवाद दिया है।

नई दिल्ली, स्पोर्ट्स डेस्क। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने खेल भावना को बढ़ावा देते हुए भारतीय ष्टिबाधित क्रिकेट संघ को अपना समर्थन दिया है। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड ने भारतीय टीम को उनकी रहने के लिए आवास में सब्सिडी दी है। बता दें कि भारतीय मेंस और महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम शुक्रवार से शुरू होने वाले इंटरनेशनल ब्लाइंड स्पोर्ट्स फेडरेशन के बर्मिंघम वर्ल्ड गेम्स २०२३ के लिए गुरुवार को बर्मिंघम विश्वविद्यालय के विश्व खेल गांव पहुंच गई।

गौरतलब हो कि ब्लाइंड क्रिकेट को पहली बार विश्व खेलों में शामिल किया गया है। भारतीय ब्लाइंड क्रिकेट टीम (पुरुष और महिला दोनों) इस मेगा इवेंट में ऐतिहासिक शुरुआत के लिए तैयारी कर रही है। हालांकि, बर्मिंघम की यात्रा आसान नहीं रही थी, बल्कि हर मोड़ पर चुनौतियों से भरी थी। बोर्ड ने बहुत कम संसाधनों में खिलाड़ी को तैयार किया।

ब ाठप के अधिकारियों ने दिया धन्यवाद

सीएबीआई के अधिकारियों ने इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) को खेल भावना और सौहार्द के लिए उनके द्वारा की जा रही मदद और उदार भाव के लिए धन्यवाद दिया है। सीएबीआई के अधिकारियों ने बर्मिंघम में आईबीएसए विश्व खेलों से पहले आईएएनएस को बताया, ष्हम हमारे रहने की लागत पर सब्सिडी देने के लिए इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) को धन्यवाद देना चाहते हैं और हमारी यात्रा को संभव बनाने के लिए इंडसइंड बैंक को भी धन्यवाद देना चाहते हैं।

आस्ट्रेलिया और पाकिस्तान से होगी भिड़ंत

अधिकारियों ने कहा, बाकी ब्लाइंड क्रिकेट टीमें जो टूर्नामेंट में भाग ले रही हैं, उन्हें उनके मुख्यधारा के क्रिकेट बोर्डों का समर्थन प्राप्त है। उम्मीद है कि किसी दिन बीसीसीआई उनका अनुसरण करेगा।ष भारतीय महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम पुरुष टीम के आने के तीन दिन बाद गुरुवार को बर्मिंघम में टूर्नामेंट के लिए पहुंची। भारतीय महिला टीम अपने अभियान की शुरुआत २० अगस्त को अ स्ट्रेलिया से करेगी, जबकि पुरुष टीम उसी दिन पाकिस्तान से भिड़ेगी।

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः— 273003
Tital code: UPHIN51019

बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com

नोटः- समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।

तीसरी बार चुनाव लड़ने को तैयार हैं पूर्व क्रिकेटर हैदराबाद है पसंदीदा सीट

स्पोर्ट्स डेस्क। अजहरुद्दीन इससे पहले भी दो मौकों पर चुनाव लड़ चुके हैं। पहले प्रयास में उन्हें यूपी के मुरादाबाद में जीत मिली थी, लेकिन अगले चुनाव में वह टोंक-सवाई माधोपुर सीट में हार गए। इसके बाद २०१६ में उन्हें टिकट नहीं मिला था। पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद अजहरुद्दीन ने तीसरी बार चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी कर रहे हैं। इस बार वह हैदराबाद की सीट से चुनाव लड़ना चाहते हैं। अजहर इससे पहले यूपी के मुरादाबाद और राजस्थान के टोंक-सवाई माधोपुर से चुनाव लड़ चुके हैं। पूर्व सांसद अजहर को २०१६ में चुनाव लड़ने का मौका नहीं मिला था, लेकिन २०२४ में उन्हें टिकट मिलने की उम्मीद है।

अजहरुद्दीन का कहना है कि इस बार लोगों का रुझान कांग्रेस की तरफ है और आगामी चुनाव कांग्रेस पार्टी सत्ता में आ सकती है, लेकिन इसके लिए उनकी पार्टी को काफी काम करना होगा। उन्होंने यह भी साफ किया कि अभी उनके दिमाग में कोई लक्ष्य नहीं है। बहुत से लोग दावा करते हैं कि इतनी सीटें लाएंगे, लेकिन वह ऐसा नहीं कर रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि इस बार वह हैदराबाद की सीट से चुनाव लड़ने का मन बना रहे हैं।

दो बार चुनाव लड़ चुके हैं अजहरुद्दीन

१६ फरवरी २००६ में भारतीय कांग्रेस पार्टी से जुड़ने वाले मोहम्मद अजहरुद्दीन इससे पहले दो बार चुनाव लड़ चुके हैं। उन्होंने २००६ में उत्तर प्रदेश की मुरादाबाद लोकसभा सीट से जीत

हासिल की थी। अजहर ने बीजेपी के कुंवर सर्वेश कुमार को हराया था। अगले लोकसभा चुनाव में पार्टी ने उनकी सीट बदल दी और उन्हें राजस्थान की टोंक-सवाई लोकसभा सीट से टिकट दिया गया।

हालांकि, इस बार अजहर को हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद २०१६ में अजहर को उनकी मनपसंद सीट से टिकट नहीं मिला और वह चुनाव नहीं लड़े। अब २०२४ लोकसभा चुनाव से पहले वह फिर से राजनीतिक रूप से सक्रिय हो गए हैं और हैदराबाद से चुनाव लड़ने की मंशा साफ कर चुके हैं। अजहर फिलहाल तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष भी हैं और उन्हें उम्मीद है कि आगामी चुनाव में वही राज्य में पार्टी का मुख्य चेहरा होंगे।

क्रिकेट में कैसा रहा अजहर का करियर?

मोहम्मद अजहरुद्दीन देश के सबसे सफल क्रिकेट खिलाड़ी और कप्तानों में से एक हैं, लेकिन फिक्सिंग के आरोपों के चलते उनका करियर खत्म हो गया। उनके क्रिकेट खेलने पर बैन लगने से पहले उन्होंने ६६ टेस्ट में देश के लिए ४५ के औसत से ६२१५ रन बनाए। इसमें २१ अर्धशतक और २२ शतक शामिल थे। टेस्ट क्रिकेट में भी उनका स्ट्राइक रेट ६३ का था, जबकि वह १६८४ से २००० के बीच अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेले। उस समय तक टी२० क्रिकेट की शुरुआत भी नहीं हुई थी। ३३४ वनडे में अजहरुद्दीन ने लगभग ३७ के औसत और ७४ के स्ट्राइक रेट से ६३७८ रन बनाए। इसमें सात शतक और ५८ अर्धशतक शामिल थे।